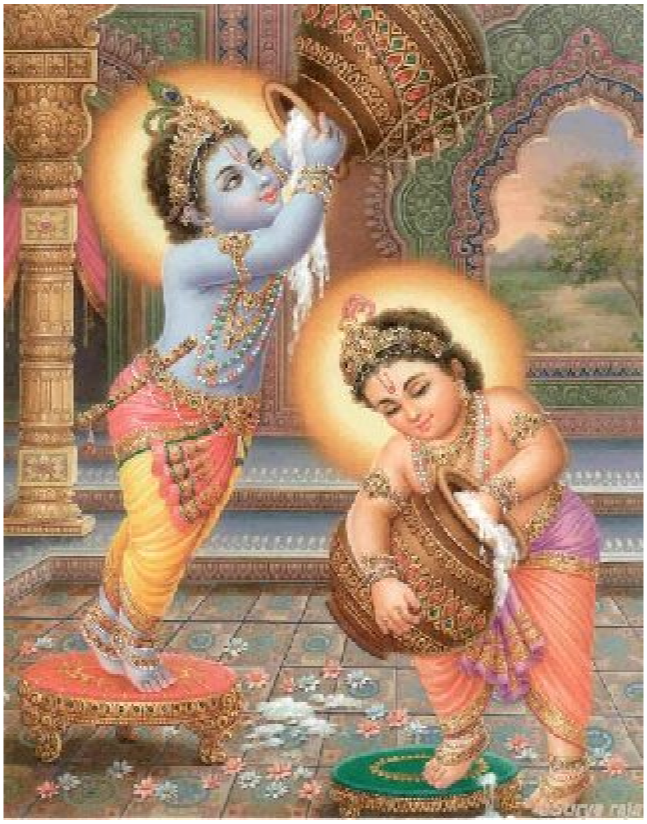

HARI BOLO

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. आ जाओ हरि इस दिल में। 1

2. निशदिन अंखियाँ नीर गिराती। 1

3. श्वास श्वास में ओम् ओम् भज। 2

4. जोड़ नहीं मन प्रीति जगत से। 2

5. दिल में उठा वह कह दिया। 3

6. मैं थका गिरा द्वारे। 3

7. हरि हरि गाऊँ नैन बहाऊँ। 4

8. नयना बरसे रिमझिम रिमझिम। 4

9. जितना लिखा है भाग्य में। 5

10. पंथ निहार थकी यह अंखियाँ। 5

11. हरि हरि जपूं पुकारूँ। 6

12. जीवन तेरा करो सुबेरा। 6

13. हरि नाम की पी घूंट मन । 7

14. मफ़ करना ईश हमको। 7

15. अखियां बरसे चैन न आये। 8

16. जपता रहूँ तुझे हरि हरपल। 8

17. किस जगह जाये न मन्जिल। 9

18. हरि तुम बिन मैं हुआ बाबरा। 9

19. हरि तुम बिन सुख कहीं न पाऊँ। 10

20. क्यों ना समझे मन तू पागल। 10

21. किसको सुनाये पीड़ मन। 11

22. हरि हरि कहूँ हरि को चहूँ। 11

23. गाओ हरि के गीतों को। 12

24. प्यारे प्यारे गीत सुनाऊँ। 12

25. वन में खोजन काहे जाई। 13

26. हरि मैं हरदम नीर बहाऊँ । 13

27. नहीं राम बिन कोई दूजा । 1428. नहीं करनी शिकायत है। 14

29. क्या प्रयोजन क्यों यहाँ हम। 15

30. नयनों से नीर बहाऊँ। 15

31. हरि मैं शरणा तेरी आऊँ। 16

32. हरि तुम बिन जियरा ना लागे। 16

33. हरि भजन बिन सत्य क्या मन। 17

34. ईश हमको तू क्षमा कर। 17

35. प्यार चाहा पर न पाया। 18

36. शक्ति तू तुझसे जहाँ है। 18

37. जीवन एक पहेली मेरा। 19

38. सत्य क्या जाना किसी ने । 19

39. लौ दीपक की बुझती जाती। 20

40. हरि हरि जपें पुकारें तुमको। 20

41. आँसुओं से करूँ पूजा। 21

42. हरि ओम कहो हरि ओम कहो। 21

43. ओम कहो मन ओम कहो मन। 22

44. कांपे हरपल रोवे जियरा । 23

45. चल रहा मन्जिल पता ना । 23

46. मन की पांखें खोलूं कैसे। 24

47. बीत रहे दिन तुम ना आये। 24

48. हरि सुना दो तुम बन्शी। 25

49. हरि हरि जपले हरि सुखदाई। 25

50. ओम कहूँ या राम कहूँ। 26

51. हरि का जाप करो मन पागल। 26

52. बीत रहे दिन तुम ना आये। 27

53. सत्य वह ही है सदा। 27

54. देखते तुझ ओर हम है। 28

55. हरि ओम जपो मन सुखदाई। 2856. हरि से प्रीति करो मन पागल। 29

57. हरि बिन मुझसे रहा न जाई। 30

58. हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ। 30

59. हरि ओम जपो मन ओम जपो। 31

60. जो भी मिला उसी में झूमो। 31

61. अर्चना मेरी अधूरी 32

62. बीत गये दिन तुम ना आये। 32

63. हरि बिना ना चैन आये। 33

64. पार लगा दो मेरी नौका। 33

65. ओम को जपते रहो मन। 34

66. हरि बोलो हरि हरि ही बोलो। 34

67. हरि तुम मुझसे रूठो नाहिं। 35

68. बिन तुम्हारे सांवरे। 35

69. हरि तेरे गुन गायें हरपल। 36

70. हरि हरि जपते सदा रहे हम। 36

71. कब मिलोगे जानते ना। 37

72. रूार हो जावे सुहाना। 37

73. दर्द लेकर ्रि रहे हम। 38

74. हरि संभाल लो मेरी नैया। 38

75. छिप गये हो तुम कहाँ पर। 39

76. सुपना सा सब बीता जाता। 39

77. नयन बहते देख लो तुम। 40

78. जहाँ में किसको पुकारे। 40

79. हरि सागर हरि हरि मन जप ले। 41

80. प्यार तुझी से हरि हम करते। 41

81. जीवन दाता जीवन तेरा। 42

82. हरि ओम कभी तू आयेगा 42

83. ते चल मुझे वहाँ तू। 4384. लहर उठी सुपनों को लेती। 43

85. नाथ खड़ा हूँ मन्दिर तेरे। 44

86. ईश कृपा करना तुम हम पर। 44

87. बनी यहाँ जैसी भी किस्मत। 45

88. ब्रह्मा विष्णु सदा शिव तू ही। 45

89. बन मिटने का खेल चल रहा। 46

90. किसके पीछे भाग रहे हम। 46

91. नारायण भज नारायण भज। 47

92. ले चल मुझे भुलावा देकर। 47

93. हरि खोजती अंखियाँ ्रिं। 48

94. हरि बिन सब कुछ लागे खारा। 48

95. चाँद तारों के पार चल। 49

96. नैया को पार लगावेगा। 49

97. राम की लीला राम जाने। 50

98. चल रहे मन्जिल न कोई। 50

99. हरि बिना तेरे नहीं कुछ । 51

100. हरि मफ़ हमें तुम कर देना। 51

101. जप ले हरि को न यहाँ है कुछ। 52

102. कैसे भूला तेरी पूजा। 52

103. हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको। 53

104. हरि भज हरि भज हरि भज मन तू। 53

105. हरि भज मग में सहज बहेगा। 54

106. हरि संभालो दास तेरा। 54

107. जीते कौन यहाँ पर हारे। 55

108. हरि दास बना लो अपना तुम। 55

109. हरि तुम्हारे गीत गाऊँ। 56

110. हरि पुकारें तू न आये। 56

1

आ जाओ हरि इस दिल में, मिट जायेगा सारा दुख। कितने ही नीर बहाये, ना मिला यहाँ फिर भी सुख। विनती तुमसे प्रभु जी यह, नयनों में बस जा मेरे। मेरी मुरझाई दुनिया, प्राण तुझी को है टेरे।

थाम हाथ लो मेरा तुम, चल न पाता थक गया हूँ। डगमग यह नौका डोले, वीच भंवर में आ फंसा हूँ। कितने ही नीर गिराये, मन को चैना न आये। बस प्रीति बढ़े हरि तेरी, दुख के बादल फट जाये।

हरि हम तेरी कठपुतली, मन जान नहीं बस में है। ले चलती हवा जिधार भी, जाना बस वहीं हमें है। तू नाच इशारे उसके, ना गम कर सब हैं हारे। दो दिन का जीवन सारा, उसके तू देख नजारे।

2

निशदिन अँखियां नीर गिराती, दास तेरे नाथ हो मेरे। अगम अगोचर पार न तेरा, समझ न आयें कैसे टेरे? तुमसे बिछुड़े चैन न पायो, जीवन सारा व्यर्थ बितायो। याद आ रही हे हरि तेरी, दे दो छैया ना भटकाओं।

नयन नीर झोली है खाली, तुम्हें पुकारूँ कैसे माली? फूल तुम्हारी बगिया के हम, मुझे डरावें रातें काली। सारे दुख को मैं भूलूँ प्रभु, प्यासा कण्ठ पिला दे तू रस। तेरे नाम की पियूँ मदिरा, जग के भोग लगे सब नीरस।

*चला न जाता अबल नाथ हम, अन्धाकार से जुड़ा है नाता। कृपा तुम्हारी जब हो जाती, तम के बादल दूर हटाता। शरण तुम्हारी लाज रखना, पड़ा द्वार पर ना ठुकराना। अज्ञानी मैं कुछ ना जानूँ, जानूँ नाथ नीर ढुलकाना।*3

श्वास श्वास में ओम् ओम् भज, उसकी सब लीला ओम् ओम्। दुख दूर करे मन के सारे, जब सुरति लगे हरि ओम् ओम्। वह सुखदाता दे सुख मन को, छोड़ो नश्वर भज ले हरि को। दुनिया यह दो दिन का मेला, ना पकड़ इसे चाहो हरि को।

वह आदि सत्य है अन्त सत्य, वह वर्तमान का है राजा। उसको हम भूल भटकते हैं, मन याद करो सुधारे काजा। देता तम में वह ही प्रकाश, इस जीवन की है वही प्यास। यह नीर गिराती हैं अँखियाँ, जिया मिलने की राखे आस।

सब ओर निराशा के बादल, मन संभल न पावे हो हलचल। ऐसे में भी हरि याद करो, फट जाते सब दुख के बादल। अँधियारे में पथ न सूझे, दुनिया से ठोकर खा रोवें। अन्तस में देख छिपा बैठा, तू देख उसे अब न सोवे।

खेल रहे हम नाट्यमन्च पर, कठपुतली है हमें नचाये। सुरति लगा पागल मन उससे, कभी हंसाये कभी रूलाये। उसके हाथों खेल रहे हैं, बहती नदिया कभी न रूकती। मैं को छोड़ इशारे समझो, यहाँ सदा उसकी ही चलती।

4

जोड़ नहीं मन प्रीति जगत से, जोड़ो नाता मन तू हरि से। उठती गिरती लहरें हरदम, हरि बिन चैन मिले न इनसे। शाश्वत की सब करे अर्चना, नाचे यह सब अपनी धुन में। जान सका न कोई किनारा, बहता यह अपनी मर्जी में।

हरि से नैन लड़ा कटते दुख, बिन उसके न कभी मिले सुख। अँधियारी रातों का साथी, विमुख हुए पायेगा तू दुख। यहाँ बसा हरि देखो जग में, लहर मिटे सागर हर घट में। डोल रही सागर में लहरें, पर भूली क्यों सागर संग में?

श्वास श्वास में जप ले हरि को, आती जाती सांसे देखो। माटी का पुतला नाचे यह, बस तेरे क्या इसको निरखो। प्रीति बढ़ा सागर से पगले, अन्तस में धुन वही बज रही। नहीं ठिकाना और कोई भी, प्रीति बढ़ा ले यही है स

3

श्वास श्वास में ओम् ओम् भज, उसकी सब लीला ओम् ओम्। दुख दूर करे मन के सारे, जब सुरति लगे हरि ओम् ओम्। वह सुखदाता दे सुख मन को, छोड़ो नश्वर भज ले हरि को। दुनिया यह दो दिन का मेला, ना पकड़ इसे चाहो हरि को।

वह आदि सत्य है अन्त सत्य, वह वर्तमान का है राजा।
उसको हम भूल भटकते हैं, मन याद करो सुधारे काजा।
देता तम में वह ही प्रकाश, इस जीवन की है वही प्यास।
यह नीर गिराती हैं अंखियाँ, जिया मिलने की राखे आस।

सब ओर निराशा के बादल, मन संभल न पावे हो हलचल।
ऐसे में भी हरि याद करो, ?ट जाते सब दुख के बादल।
अंधियारे में पथ न सूझे, दुनिया से ठोकर खा रोवें।
अन्तस में देख छिपा बैठा, तू देख उसे अब न सोवे।

खेल रहे हम नाट्यमन्च पर, कठपुतली है हमें नचाये।
सुरति लगा पागल मन उससे, कभी हंसाये कभी रूलाये।
उसके हाथों खेल रहे हैं, बहती नदिया कभी न रूकती। मैं को छोड़ इशारे समझो, यहाँ सदा उसकी ही चलती।

4

जोड़ नहीं मन प्रीति जगत से, जोड़ो नाता मन तू हरि से।
उठती गिरती लहरें हरदम, हरि बिन चैन मिले न इनसे।
शाश्वत की सब करे अर्चना, नाचे यह सब अपनी धुन में।
जान सका न कोई किनारा, बहता यह अपनी मर्जी में।

हरि से नैन लड़ा कटते दुख, बिन उसके न कभी मिले सुख। अंधियारी रातों का साथी, विमुख हुए पायेगा तू दुख। यहाँ बसा हरि देखो जग में, लहर मिटे सागर हर घट में। डोल रही सागर में लहरें, पर भूली क्यों सागर संग में?

श्वास श्वास में जप ले हरि को, आती जाती सांसे देखो।
माटी का पुतला नाचे यह, बस तेरे क्या इसको निरखो।
प्रीति बढ़ा सागर से पगले, अन्तस में धुन वही बज रही।
नहीं ठिकाना और कोई भी, प्रीति बढ़ा ले यही है सही।

5

दिल में उठा वह कह दिया, यह दिल जला तो रो दिया। बहे जाते इस नदी में, जो भी मिला वह ले लिया। हरि को जपो कटता फ़र, आंसू बहाओ याद कर। तम दूर होय मिटते डर, जाती संधया कल न कर।

जग की कहानी को लिये, किसको सुनायें दिल गमें। चाहत सभी अपनी लिये, गिर रहे नीर नहीं थमें। करने को कुछ नहीं यहाँ, जलता बस एक ही दिया। मन तू लगा उसी में दिल, मिटते सुपन मिलता पिया।

हरि प्रीति को मनुआ बढ़ा, रस जान ले ना जगत में। ब्रह्माण्ड का मालिक वहीं, हरि को जपो हर श्वास में। ना छोड़ कर जाना कहीं, उसमें लगा ले मन सुरति। बस जाये नयनों में हरि, शिकवे मिटें होती विरति।

जब प्यार मन उससे बढ़े, तपती धारा पर जल झरे। नीरस लगते जग के सुख, हरि याद में नयना झरें। मन क्यों भटकता फ़िर रहा, ना ठौर है उस बिन कहीं। मन प्राण यह हरि में भिगो, यह आरजू सब कुछ वही।

6

मैं थका गिरा द्वारे, पूजा कैसे करता? प्राण तुझे ही टेरे, मन नहीं यहाँ लगता। बना अहिंसक नहीं मैं, हिंसक इस दुनिया में। बहते आंसू मेरे, पथ दर्शा दो तम में।

मेरा कसूर है क्या, रोना ही मैं जानूँ। दुनिया तेरी घूमूं, तुझको दुख दूँ मानूँ। जीवन बहता जाता, कुछ जान न पाये हम। सुख दुख की गंगा में, बहते रहते हरदम।

अनजानी यह गलियाँ, कैसे पाऊँ सैंया? शुभ राह दिखाना तू, मैं पांव पडूँ सैंया। हरि लाज राखना तुम, आंसू में बहते हम। यह पार करो नौका, प्रभु हार गये हैं हम।7

हरि हरि गाऊँ नैन बहाऊँ, चाह चरण रज तेरी पाऊँ। ढूँढूँ कहाँ न जानू कुछ भी, बिछुड़ा प्रियतम कैसे पाऊँ? चल चल हारा मन ना नाचा, प्यार प्यास में रहा उदासा। पथ दर्शा दो भटक रहा मैं, मेरे जीवन की तू आसा।

फ़ूल तेरी बगिया के माली, मिटती नहीं नयन की लाली। प्यार हमें अपना तू दे दे, जाये भर जो झोली खाली। हरि संभाल लो बालक तेरे, मुझे डरावें तम के घेरे। जाता जीवन कुछ पल बाकी, करो कृपा मिट जाये घेरे।

नीर बहायें अंखियां हरदम, चैन न आवे तुम बिन प्रियतम। आँसू मैं यह किसे दिखाऊँ, पूछे ना कोई दिल के गम। इनकी कीमत नहीं यहाँ कुछ, बुझता जाता है यह दीपक। तुमसे सुरति रहे हरि मेरी, प्राण रहे इस तन में जब तक।

8

नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, यादें तेरी अब तो ले सुन। तुम बिन मुझ से रहा न जाये, चाह सुना दे बन्शी की धुन। हरि हरि कहते बीते जीवन, नाचे तन मन गाते हरि गुन। दास तुम्हारा लाज राखना, मुझमें कोई भी ना है गुन।

काली रातें जिय भरमाता, मेरे जीवन की तू आशा। जाम पियूँ हरि हरपल तेरा, मिट जायें फ़िर सभी निराशा। इन श्वासों में तुम्ही बसे हो, छलिया मेरे गीत तुम्ही हो। प्रीति बढ़ा ले ओ निर्मोही, अब ना छिप तुम कहाँ छिपे हो।

प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ, नयना बरसे बहता जाऊँ। इस जग के तुम ही मालिक हो, पीड़ा अपनी किसे दिखाऊँ? आओ अब तो रास रचाओ, मुरझाया यह फ़ूल खिलाओ। माली तुम ही इस बगिया के, कृपा करो जिय को हर्षाओ।9

जितना लिखा है भाग्य में, मन मिलेगा बस वही। नीर कितना ही बहा ले, तू लहर सागर मही। खेलता सागर यहाँ पर, नाज तू क्या कर रहा। वह बनाता वह मिटाता, थिर नहीं कोई रहा।

प्रीति सागर से लगा ले, प्राण उसमें भिगो ले। वह हरी बन नाचता है, लहर बन रंग जमा ले। बहा रहा मर्जी इसकी, न चले अपनी मर्जी। वह उठाता वह गिराता, छोड़ मैं जान मर्जी।

तू नहीं उसके इशारे, खेल कल हो न जाने। बह रचा ले रास उससे, जाम पी ले दिवाने। जप हरि हर तेरा रहवर, बढ़ा तू विश्वास ले। जान तू नहिं, नाचता हरि, बोझ तेरा संभाले।

10

पंथ निहार थकी यह अंखियाँ, सावन बीते तुम ना आये। नयना रो रो भये बाबरे, इनको धीरज कौन बंधाये। तुमको सुमरूँ राह निहारूँ, अज्ञानी हूँ विधि ना जानूँ। नयना नीर बहाये झर झर, बहता हूँ मन्जिल ना जानूँ।

अगम अगोचर पार न तेरा, कटे रात कब होय सबेरा। द्वार तुम्हारे नाथ पड़ा हूँ, इन प्राणों ने तुमको टेरा। दिल मेरा करता है धाक धाक, इस नौका को तुम ही खेना। डूब रही जो अन्धाकार में, बनकर खेवट इसे बचाना।

*जीवन यह दो दिन का मेला, जावे जिवड़ा सदा अकेला। तुमको भूल जगत में उलझे, कैसा खेल बनाया छैला। विनय करूं अब ना उलझाओ, निशदिन अपनी प्रीति बढ़ाओ। इन नयनों में नाचे तू ही, स्वर सोये जो इन्हे ं जगाओ।*11

हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, कहाँ खो गये इस जंगल में? दीखे ना पथ नयना बरसे, ईश संभालो रोये नगमें। एक सहारा तुम ही मेरे, टूट न जाये दिल यह टेरे। ठोकर खा खा इस जग में प्रभु, किसे कहें अब हम तो हारे।

दुखभंजक सुखदायक तुम हो, टूटे दिल की तुम आशा हो। जाते छूट जगत के रिश्ते, धयान करे जो दुख हर्ता हो। हरि तुम भूल न जाना मुझको, नयना बहे बहाना मुझको। तेरी प्रीति लगे बस प्यारी, इसमें ही तड़ाना मुझको।

इन नयनों में तुम ही नाचो, चाहे कितना हमें रूलावो। जीवन है दो दिन का मेला, छिपो नहीं अब प्रीति बढ़ावो। बहते रहें नीर पर दिल से, जाये खो नगमे गा गा कर। उठते रहे गीत बस तेरे, अज्ञानी हम तू करूणाकर।

12

जीवन तेरा करो सबेरा, अन्धाकार में भटक रहा मैं। मेरे जीवन की तू आशा, नीर बरसते हैं आंखों में। तुमको भूले ठोकर खायें, अंधियारे में राह दिखाये। जब जब तुझे पुकारा दिल ने, तू प्रकाश की किरन दिखाये।

;षि मुनि ज्ञानी तुमको भजते, बन कर कमल जगत में जीते। सुख दुख पाप पुण्य सब तज कर, तेरी गंगा में वह बहते। जग में उलझ उलझ मैं जाऊँ, कैसे हरि मैं तुमको पाऊँ? अबल नाथ मैं शक्ति मुझे दो, तेरे चरणों को मैं पाऊँ।

*पाप पुण्य सुख दुख की रेखा, पार न होती जियरा रोता। अंखियां बरसे चाह यही है, सदा नयन में मेरे रहता। मेरी पूजा यह आंसू हैं, जिनका कोई मोल नहीं है। इनसे ना वंचित कर देना, प्यारे लगते साथ यही है।*13

हरिनाम की पी घूट मन, प्रीति हरि से तू बढ़ा ले। दो दिनों का खेल जी ले, जल रहा संसार लख ले। हरिनाम को हरदम जपो, वह मिटाये कष्ट सारे। नयनों से आंसू निकले, रि नहीं लगें वह खारे।

स्वप्न सा सब चल रहा है, प्रीति जग से क्या लगाना। बहे जा मर्जी उसी की, जान ले ना दिल जलाना। कौन अपना है पराया, वासना का धुान्धा छाया। हरि चरण में हो समर्पित, उसकी मिल जाये छाया।

बैचेन मन दीखे न कुछ, लगता ऐसा सब हारे। दीप हरि का हिय जला ले, तम मिटे मिलते सहारे। नाचो कठपुतली उसकी, जानो दुख जायेंगे गल। फ़िर सतायेगा नहीं गम, संधया भी जायेगी ढल।

14

माफ़ करना ईश हमको, दास हैं हम तो तुम्हारे। अज्ञान में भटकते हैं, पथ दीखता न हम हारे। नयन से आंसू निकलते, प्राण तेरे बिन मचलते। आदि तू ही अन्त तू ही, इन पलों को क्यों विसरते?

दिल की जानो कहना क्या, प्यार हमें अपना देना। स्वप्न सी मिटती कहानी, चाहें यादों में मिटना। कहाँ छिपा, छिप जा छलिया, चाहता बिरह में मिटना। नयन जो आंसू बहाते, चाहें उसमें ही बहना।

*मैं पतंगा बन मिटूँगा, बन शमा जलता रहे तू। मैं यहाँ तेरी कृपा पर, क्यों जी रहे छिप गया तू। स्वप्न कितने ही संजोये, यह दिल सदा प्यासा रहा। तू पिला दे जाम ऐसा, वह स्वर सुनूँ जो बज रहा।*15

अंखियाँ बरसे चैन न आये, मन को धीरज कौन बंधाये। जलूँ विरह में निशदिन प्रियतम, आंसू मेरा साथ निभाये। सुख दुख दे वह तेरी मर्जी, अबल नाथ हम कुछ ना जाने। सुरति तुम्हारी रहे सदा ही, बने लहर नाचे दीवाने।

विसरी भूली यादें आयें, इस जग में मुझको भरमाये। प्रीति करूँ मैं किससे प्रियतम, सब ही छोड़ अलग हट जाये। हरि हरि गाते बीते जीवन, सुपना सा जग होता धूमिल। चरण पड़े प्रभु ना विसराना, कर्मों का बस्ता है बोझिल।

प्रीति बढ़ा नयना यह बरसे, इन बूंदों को जियरा तरसे। और न कुछ मैं तुमसे चाहूँ, बहे नयन, यादों में बरसे। अगम अगोचर पार न तेरा, नमन करो स्वीकार हमारा। कृपा होय जीवन लहराये,बसो हृदय में सदा सुबेरा।

16

जपता रहूँ तुझे हरि हरपल, नयन चढ़ाते रहें तुझे जल। जग की पीड़ा भूलूँ सब मैं, फ़िर कटे यादों में हरपल। जीवन दाता सबके पालक, नयना आवें मेरे भर भर। कहाँ छिप गये तुम वन्शीधार, सुन ने को मन बन्शी आतुर।

गिरे नीर तेरी यादों में, दिल का मेरे कमल खिलावें। क्षण भंगुर जग की तृष्णा से, चाह यही तू दूर भगावे। बस जाओ नयनों में मोहन, निशदिन निरखूँ छवि तुम्हारी। जीवन है यह बहती नदिया, बहती रहूँ हृदय में धारी।

*तेरी लीला नहीं यहाँ हम, तेरे हाथो की कठपुतली। किन बातों को ले इतराऊँ, जग की पीड़ा में मैं जल ली। स्नान करें होता पावन मन, हरि हरि हरि हरि तू गंगा जल। नैया मेरी पार लगा दो, देखो नयनों से बहता जल।*17

किस जगह जायें न मन्जिल, लहरें जहाँ वही मंजिल। क्या करें सागर नचाये, लहर की न होती मंजिल। दिल संभाले न संभलता, तन यह हरपल फ़िसलता। चाहतें पूरी न होती, नयन में आंसू मचलता।

चले जा हरि नाम लेकर, जब तक पैरों में ताकत। ना उसे बस भूल जाना, अन्त तक वहीं है ताकत। बस सहारा एक ही है, डोलते मंझधार में हैं। संग मेरे क्यों मैं भूला, इस सजा को भोगते है।

न कृपा से करना वंचित लहर हम सागर तुही है। तू लगे बस साथ मेरे, जान ले मंजिल यही है। तू उठावे तू गिरावे, कुछ नहीं अपना हमारा। नीर मेरे देख लेना, जानो अब मैं हूँ हारा।

18

हरि तुम बिन मैं हुआ बावरा, कहाँ छिपा मेरा सांवरा। तेरी यादों में खो जाऊँ, बहती इन नयनों से धारा। ले चल मेरी नौका नाविक, जियरा कांपे पथ है धूमिल। कृपा तुम्हारी पार लगे यह, जियरा रोता नाथ हम अबल।

लाज राखना इस जंगल में, जीवनदाता अन्तर्यामी। बहता इन आँखों से पानी, सेवक हम तुम मेरे स्वामी। प्रीति निभा दे प्रियतम मेरा, अन्धाकार ने मुझको घेरा। जाऊँ कहाँ कुछ भी न दीखे, देखूँ कब हो जाये सबेरा।

*चल चल गिरूँ पुकारूँ तुमको, नयना रोये बोलूँ किसको? मात पिता गुरु सखा सभी तुम, ज्योति जला पथ दीखे हमको। तेरी धुन सुन मीरा नाची, खोई राधा हरि यादों में। बना बावरा मुझको ऐसा, तुम्ही रहो मेरे नयनों में।*19

हरि तुम बिन सुख कहीं न पाऊँ, याद तुम्हारी नीर बहाऊँ। टूटे भ्रम जियरा लागे ना, चाह नयन में तुझे बसाऊँ। चलूँ गिरूँ प्रभु मुझे थामना, जियरा बस में न सम्भालना। इस जीवन के सर्जक पालक, पाऊँ कैसे पथ दिखलाना।

कितनी चाहें बनी गिरी सब, बस में कुछ भी ना यह जाना। अंधियारी रातों का साथी, धान्य हुए जिसने पहचाना। जपते जपते प्राण पुकारें, नाथ तुम्ही हो मेरे सहारे। आँसू सूखे ना नयनों के, कृपा करो प्रभु हम तो हारे।

प्रीति बढ़े तो जियरा हरषे, बहें नीर मोती से बरसे। सूखी बगिया फिर लहराती, नहीं भूलना जियरा तरसे। बुझता जाता जीवन तारा, अन्तिम क्षण तक तुही सहारा। नाम तेरी गंगा में बहता, पार लगा देना आधारा।

20

क्यों ना समझे मन तू पागल, जीवन है यह बहता बादल। जाये हवा ले पता कहाँ न, दो दिन की सारी है झिलमिल। नट बन कर तू नाट्यमंच पर, दिखला ले करतब कितने ही। जान यहाँ पर ना घर अपना, छूटेंगे अपने सारे ही।

चैन मिले हरि को जप दिल में, दीप जले काली रातों में। जग के दन्श न तुझे सतावे, खिले फूल मुरझाये दिल मे। विश्वास करो मिलती न दगा, वह आदि अन्त है यहाँ सदा। निज तृष्णा में उलझ उलझ कर, मन मत रो पागल नहीं जुदा।

*बहता जा नहीं भूल उसको, उसका जीवन दे दे उसको। आना जाना उसकी मर्जी, क्यो न दीखता पागल तुझको। खो जा मन हरि की यादों में, नहीं यहाँ तू हरि सांसों में। बजती रहती उसकी सरगम, वीणा उसके ही हाथों में।*21

किसको सुनाये पीड़ मन, कोई नहीं तेरी सुने। निज वासना का है जगत, वह धान्य जो हरि को चुने। मन जान ले हरि चैन है, दुनिया उसी का खेल है। तन संग अपना छोड़ता, पकड़े किसे नादान है।

कट जायेंगे दुख के पल, बसा नयन में हरि को मन। जो नीर देते है चुभन, हरि याद में बनते सुमन। सब कूल जाते छूटते, ना नीर तेरे सूखते। कुछ भी नहीं अपना यहाँ, जानो हरि यहाँ खेलते।

मन हरि भजन कर झूठ सब, अर्पित करो निज नीर सब। कट जायेगी संधया यह भी, न जानते क्या होगा कब? जग की पकड़ दुखदाई है, हरि भजन कर सुखदाई है। जपता रह मन उसको तू, वह तो सदा सहाई है।

22

हरि हरि कहूँ हरि को चहूँ, अबल मैं हूँ कैसे गहूँ? विनती हमारी हरि यही, धयान में तेरे ही रहूँ। कृपा तेरी जग माँगता, तुमको रो मैं पुकारता। जानूँ न कैसे रिझाऊँ,, थक कर राहें निहारता।

तुम बिन बाजे बीन नहीं, प्यार से हरि हमें लख ले। डरता जिय रात अंधोरी, करूँ विनय प्रभु तू सुन ले। कुछ भी नहीं है दीखता, सुनसान मेरी डगर है। नीर यह अँखियाँ बहाये, छिप गया तू किधार है।

*दीपक जला दो ज्ञान का, ना तिमिर से हो सामना। अज्ञान में हूँ भटकता, हरि लाज मेरी राखना। हरि प्रीति बस तुझमें बढ़े, इन नयन में तू ही रहे। आदि तू ही अन्त तू ही, तेरी रजा में खुश रहे।*23

गाओ हरि के गीतों को, छोड़ो अपनी पीड़ा को। उस बिन सारा जग खारा, न भूलो अपने मीत को। हरि हरि सुमरो कटे सफ़र, जग के लगते न शूल शर। प्रीति दिल में जब उमड़ती, बरसते नयन दिल हो तर।

प्रीति बढ़ा हरि में पागल, कुछ देर हैं न होंगे कल। क्यों धूल जग की चाटता, हरि धुन बजे हर्षाये पल। मन छोड़ ना उसकी सुरति, हरि हरि जपो चलते चलो। ले चले नौका तुम्हारी, विश्वास रख मन में चलो।

लहर बन कर बह नदी में, साथ तेरे हर सफ़र में। जान तू ना बस वही है, छोड़ डर न पड़ तू गम में। वह उठाये वह गिराये, नयन यह आँसू बहाये। याद उसकी ले मिटा जो, बह रहा हरि ही चलाये।

24

प्यारे प्यारे गीत सुनाऊँ, यादों में मैं नीर बहाऊँ। कैसे इस मन को समझाऊँ, हरि तेरे बिन न रह पाऊँ। चैन न आवे धाड़के जियरा, मेरे मोहन तू क्यों विछुड़ा? काली रातें मुझे डरावें, मुझको भूला रोवे जिवड़ा।

हरि मैं नाचूँ तेरे आगे, छाये मदहोशी ना जागें। तेरी गंगा में डुबकी लूँ, टूटें सब कर्मों के धागे। इस जीवन को देने बाले, हरि हरि मेरे प्राण पुकारें। त्रास मिटाओ पीड़ित मन की, कृपा होय तो दुख से तारे।

*जियरा उबल उबल यह जाये, जग में भटके शान्ति न पाये। हरि बस तेरा एक सहारा, चाहूँ नयनों में बस जाये। लाज राखना हरि तुम मेरी, जग में भटका हुई है केरी। शीश झुकाऊँ तुझ चरणों में, पार लगा दो नैया मेरी।*25

वन में खोजन काहे जाई, हरि तो दिल में रहा समाई। झर झर नीर गिरावें अँखियाँ, पूछें पता कहाँ हरि पाई? हरि हरि जपो देख तू हरि को, कौन देखता समझो हरि को। उसकी अपनी प्रीति निराली, निशदिन जपो सदा तुम हरि को।

पगले किससे प्रीति बढ़ाये, क्षण भंगुर आना जाना सब। टूटेंगे बन्धान होगा दुख, कौन यहाँ तू नाच रहा रब। हरि हरि जपो जिया सुख पावे, छूटे जग चिन्तन हरि आवे। नीर नयन के बनते मोती, तृष्णा छूटे तब हरि पावे।

दूर रहे हरि से दुख पावे, आना जाना खेला पल का। जितना सुमरे खिले कमल सा, हरि को छोड़ धयान है किसका? लहर यहाँ क्या सब समुद्र है, समझ अकेली दुख ही दुख है। जपता हरि को सागर देखे, जाने ना मैं सब सागर है।

आया यहाँ न किसने पूछा, जाता उसको किसने रोका? क्या सामर्थ जान ले अपनी, हरि ही खेवे तेरी नौका। हरि को जप हरि हरि ही रट लो, सोते उठते कभी न भूलो। सदा साथ वह तेरे पागल, जान यहाँ ना दुख में झूलो।

26

हरि मैं हरदम नीर बहाऊँ, कृपा होय तो तुमको पाऊँ। चला न जाता अबल नाथ मैं, विधिा ना जानूँ कैसे पाँऊ? खड़ा द्वार मैं राह निहारूँ, छटे अंधोरा दर्शन पाऊँ। प्यासी मेरी अँखियाँ मोहन, सदा नयन में तुझे बसाऊँ।

खोजूँ तुमको चल चल हारा, ज्ञान दीप को नाथ जलाना। ईश तुम्हारे बालक है हम, चाह नहीं तुम मुझे भुलाना। इस जीवन की तुम आशा हो, सदा नमन करते हम तुमको। मिले प्यार यह जिय हर्षाये, गिरते नीर देख ले हमको।चाहूँ

सदा सहारा तेरा, रोते दिल ने तुझे पुकारा। इस दुनिया के तुम हो मालिक, देख हमें लो मैं तो हारा। अन्तर्यामी जग के पालक, सबकी नौका तू ही खेता। फिर भी हम कुछ भी ना जाने, दया करो मिल जाये रस्ता।

27

नहीं राम बिन कोई दूजा, प्रभु तुम्हारी करता पूजा। दीनबन्धु करूणा के सागर, प्राण पुकारें तू अब आ जा। अँखियाँ रोये खोजें तुमको, दर्द विरह का प्यारा लागे। मतवाला बन जाम तुम्हारा, पी कर झूमूँ यह हम मांगे।

नयनो से गंगा जो बहती, बहता रहूँ यही सुख लागे। क्षण भंगुर सब प्रीति करूँ क्या, टूट रहे पल पल पर धागे। इस जीवन को देने वाले, सदा साथ पर ना पहचाना। लाज रखना दास तुम्हारा, सब कुछ तेरा ना यह जाना।

लिये वासना भागा हरपल, टूटें, नयन बहाये फिर जल। जपूँ नाम तेरा हे यादव, शीतल हो जाता फिर यह दिल। शीश झुकाये नाथ खड़े हम, हरि सुमरूँ ना तुमको भूलूँ। यही चाह चरणों को चूमूँ, इसी लपट में सब कुछ भूलूँ।

28

नहीं करनी शिकायत है, बहते कितने आँसू हैं। लहर यह भागती जाती, जहाँ हम वह ठिकाना है। छुपा है दर्द सीने में, कह दो किसको दिखलाये। सभी निज सोच में डूबे, अँखियाँ आंसू ढलकायें।

जरा देखो बहें आँसू, चुभन दिल की मिट जाये। मुबारक हो तुझे खुशियाँ, सांसे गीतो को गायें। कहाँ तुम हो कहाँ मैं हूँ, खिलाता खेल सागर है। लहर का जोर है कितना, ना जाना दिल रोता है।लहर बस प्यार को पाने, यहाँ पर भागती जाती। मिले संग कह सके अपनी, नयन में स्वप्न संजोती। बहाता है जिसे सागर, लहर सब भागती जाती। विवश सब न कोई साथी, न हरि को याद क्यो करती?

29

क्या प्रयोजन क्यों यहाँ हम, कोई भी नहीं जानता। नीर अँखियाँ यह बहाये, कोई न मन्जिल जानता। वासना से क्या मिला सुख, चाह सुख की भागते सब। न स्वयं से कोई पूछे, दूर बैठा देखता रब।

खेल खेला जान मेला, यह जगत पूरा झमेला। प्रीति मन किसकी लगाये, जान ले तू है अकेला। नित्य नूतन हो रहे हैं, दृश्य ओझल हो रहे है। सत्य जो मिटता कभी ना, दृश्य तज गम ना रहे हैं।

देख उसको देखता जो, खेलता संसार में जो। वासनाओं को बढ़ाकर, चीखता गम को बढ़ा जो। मन सदा जपते रहो हरि, सुखद यह तय सफ़र कर लो। क्या प्रयोजन यह न पूछो, जिन्दगी में रंग भर लो।

नाम ले बहते रहो मन, पकड़ोगे रोना होगा। जानो कठपुतली उसकी, छोड़ मैं सुख तभी होगा।

30

नयनों से नीर बहाऊँ, मैं किसको पीड़ दिखाऊँ? मात पिता गुरू सखा सभी, शरण तेरी हरि मै आऊँ। यह मन डोले इधार उधार, कैसे इसको समझाऊँ? प्रीति बढ़े हरपल तुमसे, सब कुछ भूल तुझे पाऊँ।

चलूँ संभल जियरा कांपे, गिर गिर मैं फिर भी जाऊँ। पाप पुण्य कर्म रेख को, मिटा सकूँ ना घबराऊँ। जीवनदाता मैं बालक, मिटे अन्धोरा होय सबेरा। मुझको भूल नहीं मोहन, बसो नयन में, मैं तेरा।जग पालक कैसी लीला, घट घट

भरी हुई पीड़ा। पोंछे फिर भी तू आंसू, ना जानूँ तेरी क्रीड़ा। नीर बहे तुझे पुकारें, चल न सके बिना सहारे। पार लगा मेरी नैया, लाज रखना हम हारे।

31

हरि मैं शरण तेरी आऊँ, श्वास श्वास में तुझे बुलाऊँ। इस जीवन का तू रखवाला, तेरे बिन अब ना रह पाऊँ। हरि हम तेरा करते वन्दन, धूल चाटते बीता जीवन। अँखियाँ नीर बहाती हरदम, कृपा मिले खिल जाता उपवन।

लाज रखना सृष्टि रचियता,स्वामी तुम हो मैं हूँ सेवक। फिर करूँ मैं होता गाफिल, तुम ही इस जीवन के मालिक। जीवन दूभर भूल न जाना, हरपल होती रहती हलचल। नाम तुम्हारा एक सहारा, अनजानी गलियाँ मन बोझिल।

एक झरोखा दे दे मुझको, खोजूँ कहाँ यह मन हैं चंचल। उठती गिरती इन लहरो में, थाम मुझे ले गिरता है जल। फूल तुम्हारी बगिया के हैं, मिटती नहीं नयन की लाली। द्वार खड़ा ले झोली खाली, तुझे पुकारूँ आ जा माली।

32

हरि तुम बिन जियरा ना लागे, खोजूँ कहाँ न मारग सूझे। दीनबन्धु करूणा के सागर, अँखियाँ रोवे तुमसे बूझें। सुनूँ बांसुरी जियरा नाचे, सुन कर मस्त हो गई मीरा। प्रीति तुम्हारी विरह बढ़ाये, चाह भस्म हो उसमें जियरा।

अगम अगोचर पार न तेरा, कृपा बिना न होय सवेरा। अबल नाथ हम दास तुम्हारे, पार लगा दो किस्ती मेरा। निर्मोही ना बनो ओ छलिया, झर झर अँखियाँ नीर बहाये। तेरा प्यार सदा हम चाहें, तुम बिन कहो कहाँ हम जायें।धाड़कन। ठोकर खाते तुझे भूलकर, माफ करो तुम मेरे मोहन। जियरा तड़पे रोवे अँखियाँ, कहाँ छिपे तुम प्यारे छलिया। छिप छिप कर तू हमें नचावे, गये हार हम पड़ते पैंया।

33

हरि भजन बिन सत्य क्या मन, देखो जग जलता हरपल। प्रीति तू किससे लगाये, टूटते हर कदम पर दिल। कौन अपना है पराया, खेले हरि उसकी माया। नीर यह अँखियाँ बहाती, धुल ना पाती यह काया।

डोले यह नैया डगमग, हरि पुकारो खो गया मग। देखें सूनी सी अँखियाँ, कौन हमको है रहा ठग। पाप क्या है पुण्य क्या है, घूमें सुख दुख का पहिंया। जलता दिल जाने क्या है, भजन कर ले मिले छैया।

वासनाओं से भरा जग, यह मिटे, ना फिर यहाँ कुछ। बहे जा बस लहर बन कर, जान ले ना जोर है कुछ। प्रीति हरि से मन लगा तू, जान दो दिन की कहानी। किसे करनी है शिकायत, यह बहायें नयन पानी।

लहर हम सागर मचलता, बस ना, सुख हरि जो जपता। छूट जाये जगत तृष्णा, नयन में तब हरि मचलता। डोरी हाथो में हरि के, जान ले खुद को मिटा दे। शीश अपना तू झुका दे, नयन के आंसू चढ़ा दे।

34

ईश हमको तू क्षमा कर, जानते कुछ भी नहीं है। नयन से आंसू निकलते, खोजते मग तड़पते है। चाहते तेरी कृपा हैं, क्यों हुआ हमसे खफा है? अज्ञान की मैली चादर, घुटे सासें दम नहीं है।फूल तेरे बाग के हैं, गुलशन तेरा ही माली। नयन यह आंसू बहाते, आँख की मिटती न लाली। थामों मेरी यह बैंया, दीखती मुझको न छैयां। दास तेरे हम भिखारी, फेर मुँह न, रोती अँखियाँ।

शीश चरणों में धारा है, मर्जी जैसी है नचा ले। मुझसे तुम न रूठ जाना, विनय मेरी नाथ सुन ले। सुरति तुझमें ही रहे प्रभु, गम जगत के भूल कर सब। नयन से जो नीर निकले, खोजते तुमको रहें रब।

35

प्यार चाहा पर न पाया, तड़ते ही हम रहे हैं। नयन से आँसू निकलते, ना किसी के हम रहे हैं। दीखे न अनजान राहें, आशा थी कोई थामें। टूटी आशा खोई मन्जिल, करो भरोसा हरि थामें।

मन बनो तुम दास हरि के, देख अब है कल नहीं तू। वासना के जाल में ंस, जिय जला न भज ले हरि तू। हरि भजो मन दुख कटें सब, वह संभाले रैन काली। बाग उसका ूल हम हैं, पुकार लो देखे माली।

जाप हरि का दे सदा सुख, भाग जाते हैं सभी दुख। स्वप्न सा खेला जगत में, कर न मन बैचेन ले सुख। प्रीति जग की जान झूठी, ना किसी के हाथ आती। बन कमल जी ले जगत में, प्यार हरि जप यह बढ़ाती।

36

शक्ति तू तुझसे जहाँ है, खोजता हूँ तू कहाँ है? खेलते कुछ पल यहाँ पर, डोर ना जाने कहाँ है? ;षि मुनि गुणगान करते, नयन में आंसू मचलते। टीस इस दिल में छिपाये, कल्पना के जाल बुनते।हरि भजे ना मन लगे ना, देख ले जग झूठी प्रीती। मन कहो जाये कहाँ पर, नयन से जलधाार बहती। तू अकेला जग झमेला, आता पीछे से रैला। देखते ही देखते सब, मिटता है सारा खेला।

धयान ना हरि का लगाये, चैना िर कैसे पाये। टूटते सुपने यहाँ पर, जाल में नित ंसे जाये। हरि कहो मन हरि कहो मन, इन अंधोरी रातों में। दीप पथ में वह दिखाये, मन जान ले हरि साथ में।

37

जीवन एक पहेली मेरा, आशाओ ने मुझको घेरा। जियरा डरे चैन न आवे, देख रहा कब होय सुबेरा। हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, इस जंगल में खोजूँ तुमको। जियरा मेरा भर भर आये, करूँ विनय मैं पाऊँ तुमको।

पार लगा दो मेरी नौका, खेवट मेरे तुम्ही खिवैया। झर झर नीर गिरें नयनों से, चाह मिले हरि तेरी छैंया। दास तुम्हारे हमें देख लो, बहते आंसू इनको लख लो। अबल नाथ हम शक्तिमान तुम, गिर गिर जायें हमें थाम लो।

अनजानी गलियाँ यह रस्ते, दन्श लगें जग के हम रोते। नाम हरि इक तेरा सहारा, कृपा करो हम पैंया पड़ते। प्राण पुकारें मेरे तुमको, द्वार खड़े लौटा ना हम को। प्रीति तुम्हारी में रंग जायें, बचा जगत तृष्णा से हमको।

शीश धारूँ चरणों में तेरे, मिटा यहाँ ैले तम घेरे। करूणा तेरी मिले प्रियतम, मिट जाते सब दुख के घेरे।

38

सत्य क्या जाना किसी ने, बात हरपल ही करें। द्वन्द में झूले दुनिया, नीर आंखों से गिरे। दिल नहीं लगता यहाँ पर, दिल लगाते िर रहे। टूटते सुपने यहाँ पर, बिलखते हम िर रहे।खोजे सुख यह मन पागल, पाप क्या है पुण्य क्या? पुण्य बढ़ता सुख मिले तब, जान पाया पुण्य क्या? डूबी जाती है नौका, मन समझाते िरें। कल्पना के जाल में जी, नीर अंखियों से ढरे।

दोष हम किसका निकाले, नियति के रंग कितने। ना समझ हरि नाम जी ले, जीव के ढंग कितने। जान पायेगा न पागल, ढंग जग के निराले। छोड़ मैं तब राम जाने, बन लहर यहाँ बह ले।

39

लौ दीपक की बुझती जाती, बुझा बुझा यह दिल जाता है। तेरी प्रीति लिये चलता हूँ, मुझको अब ना जग भाता है। जीवन सारा बीत गया यह, हरि हरि तुझे पुकारूँ मैं अब। तड़पू जैसे मछली बिन जल, ना पता मिलन होगा प्रभु कब?

न मिटा अन्धोरा मैं रोया, जग में भटका चाहा डेरा। खाई ठोकर नयन खुले ना, बना पुजारी ना प्रभु तेरा। क्या कसूर जो तुम रूठे हो, कहाँ छिपे हो ना जाने तुम। दिखा रहे क्या अपनी लीला, बैठा जाता इस दिल में गम।

तेरा तन हरिं मैं ना कुछ हूँ, नाचूँ बन कर कठपुतली हूँ। क्यों रि भी मैं चिन्तित होता, अज्ञानी कुछ ना जानूँ हूँ। नयन झरे ना, पथ नहीं दीखे, नयन हो गये यह भी रूखे। प्रभु कर देना हमें क्षमा तुम, पुष्प अर्चना के यह सूखे।

40

हरि हरि जपें पुकारें तुमको, जाना भूल न मोहन हमको। मालिक हो तुम सकल सृष्टि के, दृष्टि ज्ञान की दे दो हमको। गुनगान करें हरि तेरा ही, अर्पण कर दें जीवन तुमको। अंहकार ने सदा नचाया, हर लो बस प्यार करें तुमको।तुम न मिलो जियरा घबरावे, कैसे इस मन को समझावे। पंथ निहार थकी यहअँखियाँ, संधया भी यह ढलती जावे। मन ना लागे तुमसे विछुड़े, नयना मेरे रिमझिम बरसे। सुखदाता आनन्द तुम्ही हो, सूखी धारती पर तू बरसे।

तुमको सुमरें कभी न भूले, नयनों में बस जाओ मोहन। सुनूँ सदा मैं बन्शी तेरी, गूंजे मेरे कानों में धाुन। नमन करूँ आँखों में जल है, लाज राखते हो तुम हरपल। अज्ञानी हूँ दूर करो तम, संधया भी जाती है अब ढल।

41

आंसुओं से करूँ पूजा, जग में जिसका मोल कुछ ना। नाम ले मैं चल रहा हूँ, होगा कल क्या जानता ना। कुछ न अब अच्छा लगता, राह तेरी देखता हूँ। अनेकों हैं भंवर मग में, तुझ कृपा से बह रहा हूँ।

तू दयालू दीन मैं हूँ, ईश दिल कैसे दिखाऊँ? लाज तुम ही राखते हो, नयन के आँसू चढ़ाऊँ? चल चुका हारा थका हूँ, रो रहा तुझ द्वार पर। मुझको प्रभु ठुकरा न देना, यह नौका डूबे पार कर।

जिन्दगी की शाम आई, न बनो हरजाई मोहन। प्राण यह तुमको पुकारें, चाह यह सुनता रहूँ धाुन। अबल हूँ जाता चला ना, चाह तेरे चरण मिलते। नहीं मुझसे रूठो मोहन, नयन से आसूँ बरसते।

42

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, तुमको ढूंढूं छिप कहाँ गये? तुम बिन जियरा यह लागे ना, नयना रोये क्यों बिछुड़ गये? हरि तुझमें धयान लगे हरपल, जाता जीवन थोड़े से पल। हरि कृपा बनाये रखना तुम, करूणासागर मैं दास अबल।

आँखें खोली जग को देखा, कर्मों की पार न हो रेखा। तृष्णा ले भागा इधार उधार, रोना हंसना खेला देखा। तुझ कृपा मिले न भटके जिय, क्षण भंगुर सुख में क्या हँसना। जलती होली मन देख यहाँ, हरि धयान लगा फ़िर क्या रोना।

जिस बगिया में है जन्म लिया, मालिक पालक संहारक है। मन जान यहाँ अपना है क्या, मत रो सब खेल उसी का है। मन जपो हरि कट जाये फ़र, कल क्या हो इसकी नही खबर। सब कुछ उसका बैचेन न हो, बहता जा सब तू छोड़ फ़िकर।

जप उसको हरपल मन पागल, धाीरे धाीरे ढलता है दिन। यहाँ अपना कौन पराया है, नाचो उसकी कठपुतली बन। जो नीर बहें दे दे उसको, तू नहीं, नाचता हरि समझो। हरि प्रीति बढ़े छलके नयना, मैं नहीं, सभी हरि का समझो।

हरि प्रीति बढ़े खिल जाये दिल, जग के भय सारे मिट जायें। आना जाना उसकी मर्जी, क्या अकड़ लिये जो दिखलाये? जब गिरते उलझ न दीखे पथ, मन झुक जा हरि के पकड़ चरण। अन्तिम बस एक सहारा है, जग में ना कोई और शरण।

43

ओम कहो मन ओम कहो मन, उसके बिना नहीं कभी रहो। बिगड़े काम सभी बन जायें, उसकी शीतलता सदा गहो। जीवन है यह बहती धाारा, उसके बिन सारा जग खारा। मन सदा जपो भीगो उसमें, कठिन क्षणों का वही सहारा।

नयना बरसे तुझे ले चले, मिल जाये जब हरी प्रीति रस। सूखा सरवर कमल फ़िर खिले, क्षण भंगुर जग के सुख नीरस। नहीं किनारा दीखे कोई, दुख में जब अंखियाँ यह रोई। जग के लोग चुरावे अंखियाँ, हरि का भक्त न धाीरज खोई।

दुनिया है दो दिन का मेला, जाना सबको यहाँ अकेला। हरि बिन चैन कभी ना आवे, मन समझो जग बड़ा झमेला। क्यों उदास मन कर तू बैठा, अन्तस हरी की गंगा बहती। पी ले जाम उसी का हरपल, सुख नदिया नयनों से बहती।

44

कांपे हरपल रोवे जियरा, जीवन में आये बहार ना। पतझड़ जैसे जीवन बीते, हरि तुम रूठो कही जगह ना। दीप जला दो रात अंधोरी, मुझे भुला ना मैं हूँ तेरी। इन सांसों का तू ही मालिक, तुम बिन रोयें अंखियाँ मेरी।

जाती सांझ न जाने कुछ भी, नहीं पता फिर सुबह कहाँ हो। प्रेम प्याला पीकर तेरा, बहता जाऊँ नहीं फिर हो। कृपा मिले जियरा ना कांपे, दुख के बादल नहीं सतावें। मगन रहूँ तुझमें बस हे हरि, अज्ञानी मैं कुछ ना भावे।

हरि हरि मेरे प्राण पुकारें, अन्तर्यामी किसे दिखावे? पाप पुण्य कर्मों की रेखा, पार ना हो काहे सतावे। नमन करो स्वीकार हमारा, द्वार खड़ा मैं थक कर हारा। अंखियाँ मेरी रोती देखो, आंसू मेरे बने अधाारा।

45

चल रहा मन्जिल पता ना, देखता तुझ ओर अब आ। नीर नयनों से निकलते, ढल रही यह शाम अब आ। जन्म कितने ही लिये है, ना मिटी दिल की जलन पर। कृपा हो जाये तुम्हारी, मिलता रस्ता जो दूभर।

प्राण में बस जा मुरारी, स्वप्न से न जा मैं हारी। दिल नहीं लगता हमारा, लो शरण में तुम मुरारी। सृष्टि का मालिक तुही है, चाहता वैसे नचाये। पांव हम पड़े हैं तेरे, दूर करो दुख के साये।

स्वर उठें तेरे सदा ही, लीन भी होते तुझी में। मैं यहाँ ना, बस यहाँ तू, समझ दे दो नाथ मुझमे। अर्चना मेरी अधाूरी, नाथ मैं यह जानता हूँ। अबल हूँ साहस न मुझमें, तुझ कृपा को चाहता हूँ।

46

मन की पांखे कैसे खोलूँ, अज्ञानी मैं कैसे खेलूँ? जियरा मेरा भर भर आता, तुम रूठो ना तुमसे बोलू। जीवन के सर्जक पालक हो, मेरे भाग्य विधााता तुम हो। जाऊँ कहाँ मैं तेरे बिना, तुम ही तो मेरे रक्षक हो।

अनजानी जग की है गलियाँ, जान सका ना रोई अंखियाँ। मिल जाये प्रभु कृपा तेरी जो, खिल जाये जिय जो कुम्लाया। हरि हरि मैं रटता हूँ हरपल, दूर करो प्रभु दुख के बादल। करूँ अर्चना मैं तेरी प्रभु, नयन चढ़ाते यह तुमको जल।

ले जाये हवा न पता किधार, खोया देखूँ मैं गये किधार? हरि प्रीति बढ़े सुमरूँ तुमको, बरसे अंखियाँ खो जाता डर। हरि कृपा बनायें रखना तुम, ज्ञानी मैं ना रस्ता दूमर। नौका को पार लगा देना, अंखियाँ मेरी बरसे झर झर।

47

बीत रहे दिन तुम ना आये, मन को धाीरज कौन बंधााये? तड़ू जैसे मछली बिन जल, बहते आँसू तुझे बुलाये। बढ़े विरह जल जाऊँ इसमें, अच्छा लागे कुछ ना जग में। बस जाओ मेरे नयनों में, पांव पडू. ठुकरा ना मग में।

हरि हरि तुझे पुकारूँ हरपल, सांसे गाति हरदम यह धाुन। तुम ना आये भया बाबरा, सांझ भई यह जाता जीवन। चाह तुम्हारी क्यों जीवन है, मुरझाया मेरा उपवन है। आ संभाल ले मेरे माली, टूट गया मैं क्यो उलझन है?

*सृष्टि रचैया जग के पालक, दास तुम्हारा मैं हूँ सेवक। याद सताये हरपल तेरी, जियरा मेरा करता धाक धाक। बहते आंसू विनय करूँ मैं, पहुँचा दे तेरे चरणों तक। जग में जिसका मोल नहीं कुछ, सूख न जाये तुझ मिलने तक।*48

हरि सुना दो तुम बन्शी, कह रहे सब अपनी। जिसे सुनकर झूमें दिल, बहता नयन पानी। आ बसो तुम नयनों में, मिट जायें जगत गम। चाहत मेरी नाथ यह, रहना संग हरदम।

मन्दिर पर बैठ तेरे, जिन्दगी सब गुजारूँ। पीकर हाला तुम्हारी, तुझे हरपल पुकारूँ। तुम्ही अब दिल में बसे, चरणों में गिरा हूँ। अब नहीं मुझे सजा दे, चाहूँ मैं तुझे हूँ।

खेलता तू यहाँ पर, कठपुतली तुम्हारी। नाचें जैसा नचाये, मैं थक गिरा हारी। बालक हूँ धयान रखना, मुझसे न रूठ जाना। दिल में सदा ही रहना, बीत जाये सुपना।

49

हरि हरि जप ले हरि सुखदाई, अन्तस में वह रहा समाई। उस बिन चैन न आवे मन को, सारे भ्रम दिल के मिट जाई। हरि हरि जप ले कौन जप रहा, देख नयन से नीर बह रहा। पागल बन घूमें दुनिया में, हरि को भूल व्यग्र हो रहा।

हरि को जपते देख स्वयं को, प्रीति बढ़ा ना छोड़ जतन को। बनती मिटती इन लहरों में, देखो हरि को डुबा स्वयं को। मृगमरीचिका छोड़ जगत की, मेहमां सांस है कुछ पल की। नयनों में जब हरी समाये, मिट जाती सब चुभन हृदय की।

*हरि की कृपा जगत में खेले, जब चाहे वह सब कुछ ले ले। तेरा क्या भरमावे मनुआ, क्यों ना पकड़े दामन बह ले। बढ़े प्रीति जियरा सुख पावे, जग के डर फिर नहीं सतावे। नयनों से निकले जो गंगा, हरि का पता वही बतावे।*50

ओम कहूँ या राम कहूँ, तुम कह दो क्या तुझे कहूँ। अँखियाँ रोवे चैन न आवे, तुम रूठो ना मैं नहीं सहूँ। जग में भटकूँ नहीं किनारा, तुम ही मेरा एक सहारा। पार लगा दो मेरी नौका, कृपा करो प्रभु मैं तो हारा।

अँखियाँ खोली जग को देखा, पाल रहा जग यह भी देखा। लगी भूख मैं चिल्लाया फिर, दूधा पिलाते माँ को देखा। बहें नीर तो लोरी देते, चुप हो चुप हो पाठ पढ़ाते। आँखों में निंदिया छा जाती, कौन लोक की सैर कराते।

मीठे मीठे सुपने लेते, टूटे जब यह फिर हम रोते। मत खो सुपनों में मन पागल, हरि भज नौका वह ही खेते। हरि भज हरि भज सत्य वही है, ओम राम सब रूप वही है। धयान लगे जब हरि में मनुआ, सब संकट का काल वही है।

51

हरि का जाप करो मन पागल, जीवन डोरी टूट रही है। सुपनों में मत खो दुख का घर, दिल में पीड़ा तड़ रही है। हरि जप चैन मिलेगा मन को, मुरझाया जो कमल खिलेगा। जग की इन टेढ़ी राहों में, जप ले मन का कष्ट मिटेगा।

हरि हरि जप ले जग में बह ले, सब कुछ उसका उसमें जी ले। दो दिन का है खेल यहाँ पर, मदिरा उसकी हरपल पी ले। मर्जी सदा उसी की चलती, लिये इशारा सांसे चलती। सुख सागर दुखहर्ता वह ही, जप ले हरि को संधया ढलती।

माया कितने नाच नचाये, हरि को भूले चैन न आये। उठी गिरी कितनी आशायें, सोंचे इनसे तू तर जाये। सुपना सा सब बीता जाता, पागल इसमें क्यों भरमाता। सदा यहाँ ना रैन बसेरा, काहे अपना जिया जलाता। हरि को याद करो दुख मिटते, सुबह शाम को वह ना लखते। हरि गंगा में हुए विसर्जित, बहते जाते कुछ ना कहते। दो दिन जीना हरि में जी ले, नीर बहें वह उसको दे दे। उसकी मर्जी यहाँ खेलती, कौन यहाँ तू हरि मे बह ले।

52

बीत रहे दिन तुम ना आये, नयना रिमझिम नीर बहाये। अँधियारे में डरता जियरा, तुम बिन दीपक कौन जलाये? तुझे पुकारूँ रोवे अँखियाँ, मुझको छलो नहीं अब छलिया। द्वार तुम्हारे खड़ा हुआ मैं, कृपा करो अब दे दो छैंया।

हरि हरि सुमरूँ तुझे न भूलूँ, नाथ यही वर मुझको देना। खो जाऊँ तेरी यादों में, क्षण भंगुर जग से क्या लेना। मेरे जीवन की आशा हो, चाहूँ कभी रुका ना होना। अज्ञानी हूँ तेरा बालक, अपना प्यार सदा ही देना।

सुपनों की दुनिया में घूमा, दन्श लगे पग पग पर टूटा। फ़िर भी आंखे खुली न मेरी, तार हाय क्यों तुझसे टूटा। विसर गई क्यों तेरी यादें, जियरा मेरा करता धाक धाक। अबल नाथ पथ को ना जानूँ, कृपा करो जो पहुँचू तुम तक।

विनय सुनो मैं हार गया थक, करूँ अर्चना पास नहीं कुछ। बहते आंसू पहुँचे तुम तक, जग में जिनका मोल नहीं कुछ। तेरा जीवन तुझे न भूलूँ, नाथ नहीं मुझमें कोई गुन। हरि हरि कहते बीते जीवन, दशों दिशायें गायें संग धुन।

53

सत्य वह ही है सदा, प्रीति हरि में मन लगा। नाचें कठपुतली बन, दिल नहीं जग से लगा। शिकवा करता किससे, लुट रहा सारा जहाँ। खेल दो दिन खेलकर, ना पता होंगे कहाँ? डोर उसके हाथ में, सुरति डोरी समझ ले। क्या अकड़ अपनी लिये, बन खिलौना नाच ले। छूट जाये ना सुरति, देख ले शाम जाये। प्रीति में तू मगन हो, नाच जब तक नचाये।

लहर सागर बहाता, बन लहर जोड़ नाता। तू नहीं बस वही है, समझ अँखियाँ बहाता। प्रेम से देख सबको, सब में देखो रब को। सुरति को ना भुलाना, वसा दिल में उसको।

54

देखते तुझ ओर हम हैं, कह सके कुछ भी नहीं बल। चाह इतनी माफ़ करना, नयन से मेरे बहे जल। सृष्टि के तुम हो रचयिता, जानो घट घट की तुम हो? यादों में मिटता तेरी, किस जगह मोहन छिपे हो?

मैं थका हारा मुसाफ़िर, गिर रहे हैं नीर झर झर। रूठ ना मुझसे नहीं तुम, जिन्दगी का मार्ग दुस्तर। सूख जायें ना नयन जल, भस्म हो जाऊँ विरह में। तुम बिना अच्छा नहीं कुछ, बनूँ परवाना मिटूँ मै।

तुझ दया को चाहते हैं, दास को तुम ना सजा दो। बीत जायेगी कहानी, तुम मधुर बन्शी सुना दो। बैठ तेरे द्वार पर प्रभु, हर समय जपता रहूँगा। बल नहीं तुम तोड़ना प्रभु, चरण को धोता रहूँगा।

55

हरि ओम जपो मन सुखदाई, दुख तेरे सारे कट जाई। इस जग की है रीति निराली, पकड़ न कर बहता सब जाई। बीच भंवर में डूब रही हो, नयन करें जब जल से पूजा। उसकी पार लगावे नौका, हरि बिन कोई और न दूजा।जनम जनम के पाप मिटेगे, मन क्यों उलझे इस जंगल में। खा ना अब तू जग से धोखा, बसा हरी को अपने घट में। हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, दिल का सोया कमल खिलेगा। बिन उसके ना गाये कोयल, कैसे मन का बोझ हटेगा।

हरि भज निर्बल का वह ही बल, शक्तिवान भी जाते है झुक। सकल सृष्टि करती परिकर्मा, हरि चरणों में तू भी जा झुक। लहर बना सागर में बह ले, प्रीति न छूटे इस अन्तस में। लहर नहीं यह सागर नाचे, मैं को छोड़ो डूबो इसमें।

हरि जप वह सुख का सागर है, तपती धारती का बादल है। कितना भटको चैन मिले ना, इन प्राणो का वह प्रियतम है। हरि जपता जा तू बहता जा, जान किनारा हरि ही जाने। किसने पूछा जब तू आया, जायेगा कब हरि ही जाने।

56

हरि से प्रीति करो मन पागल, जग यह लक्ष्य नहीं जीवन का। मन भटके मन जग में डोले, जाने ना खेला दो दिन का। चक्र चल रहा इसको भूला, चैन न पायो हरपल रोया। मिटा सका ना मैं की रेखा, कांटे लगे समझ को खोया।

जग के सुख सब ही क्षण भंगुर, प्रीति बढ़े हरि से दुख भागे। हरि हरि कहते बीते जीवन, बरसे मेघ सभी तन भीगे। तेरी मर्जी देख यहाँ क्या, खड़ी वासना कर दुख पाया। नाच नचाये हरपल तुझको, जप ले हरि को मिलती छाया।

हरि दयालु वह सुख का दाता, तेरा ही वह भाग्य विधाता। उसको भूल जगत में घूमें, नीर बहाये हरपल रोता। हरि को मान जिया रिर हरषे, संकट मग के सब कट जाते। जैसे रिमझिम सावन बरसे, हरि गंगा में जो भी बहते।

57

हरि बिन मुझसे रहा न जाई, काहे मुझसे नयन चुराई। जग के पालक हम बालक हैं, प्रभु तेरी मैं शरणा आई। दीन दयालू सुख के दाता, तुमसे सारा जीवन आता। तेरी जो करे अर्चना, दुख का दरिया पार कराता।

नयन बहाऊँ राह निहारूँ, छल ना कर अब मुझसे छलिया। पार लगा दो मेरी नौका, डगमग करती होती संधया। स्वप्नजाल सी सारी दुनिया, रंग बदलती हरपल छैला। यादों में तेरी पल बीते, कभी नहीं हो यह मन मैला।

सब जग की मैं गाथा भूलूँ, बस जाओ मेरे नयनों में। मृगमरीचिका दूर हटे सब, तुझे निहारूँ हरपल दिल में। आ जा माली तुझे पुकारूँ, तुम सा नहीं जगत में दूजा। शीश झुका तेरे चरणों में, अश्रु नयन के करते पूजा।

58

हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ, रिमझिम अपने नीर बहाऊँ। बह जाऊँ मैं इस गंगा में, पास न कुछ जो मैं दे पाऊँ। नाम तुम्हारा प्यारा लागे, नयना मेरे रिमझिम बरसे। इससे बढ़कर क्या सुख कोई, प्राण मिलन को तुमसे तरसे।

जीवन की तुम ही हो आशा, जग में भटका मिली निराशा। जाम तुम्हारा जिसने पीया, मगन हुआ जग बना तमाशा। नाथ यही तुमसे है कहना, हरि हरि कहते बीते जीवन। दास तुम्हारा कभी न भूलूँ, निशदिन बजती रहे यही धुन।

अपनी कृपा बनाये रखना, और नहीं कोई भी सुपना। धयान तुम्हारा कभी न टूटे, विनती करूँ यही है कहना। इस जीवन को देने वाले, सरगम तेरी लागे प्यारी। चल चल हारा नाथ जगत में, लाज राखना शरण तुम्हारी।

59

हरि ओम जपो मन ओम जपो, सुमरण कर सब दुख दूर करो। उस बिन तृप्त न होवे मनुआ, चाहे कितना तुम जतन करो। ओम प्रीति में जो भी चलता, नयना बरसे पर पथ मिलता। आती जाती इन सांसों को, देखे हरि का रस्ता तकता।

ओम जपो मन सुखदाई वह, क्षण भंगुर जग के सुख सारे। जिसके दिल में वह लहराये, टूटे बन्धान वह ही उबारे। सुख का दाता वह पालक है, सबका वह ही भाग्य विधाता। बिना कृपा न छटे अन्धोरा, जप उसको ि्र गम ना आता।

कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है, देख रहा वह प्यार कहाँ है? जिसको लेकर मीरा नाची, खोया वह अन्दाज कहाँ है? देना वर प्रभु यही तुझे तुम, तुझमें सोऊँ तुझमे जागूँ। चाहत रहे न कोई बाकी, सुरति हटे ना वस यह मागूँ।

60

जो भी मिला उसी में झूमों, दुनिया सपनों की ना भटको। जो भी खेल खिलाये नाचो, तन भी जाता कितना रोको। आँख खोल जग को देखो, कितनी योनी घूम रही है। अपने अपने ढंग से जी कर, लीन शुन्य में सदा हुई है।

सुपना सा सब बीता जाता, जो भी जहाँ वहीं इतराता। पर कितना है जोर किसी का, मन तू समझ नहीं क्यों पाता। देख ू्ल भी गन्धा लुटाता, खड़ा जहाँ वह कहीं न जाता। कुदरत खेल खिलाये नाचे, पानी धाूप हवा सब पाता।

*हरि की मर्जी नाचे जब तक, तोड़े खुद को बचा न पाता। बना दिवाना जो भी हरि का, हरि ही जाने उसका खाता। लहर बना सागर में बह ले, बाकी जान यहाँ सब धाोखा। जप ले हरि सब यहाँ वही है, जान न पाया कोई लेखा।*61

अर्चना मेरी अधाूरी, प्रभु कर दो पूरी इसको। नीर बहते देख इनको, तुम बिना हम कहें किसको? ना किसी से हो शिकायत, जिये जैसे तू जिलाये। सुरति तुम में हर समय हो, नयन यह आंसू बहाये।

सृष्टि के मालिक तुम्ही हो, घूमते अनजान गलियाँ। तुम रूका मुझ से न होना, हे हरि हम पड़ते पैया। तपती धारती तू ही बरसे, और ना कोई सहारा। ताप जग के तू मिटाये, नाथ तू ही सृजनहारा।

प्रीति मेरी हरि तुम्ही हो, ना बिछुड़ जाना कभी भी। बल मुझे दे बन पतंगा, गोद पा जाऊँ कभी भी। धयान हरपल हरि रहे यह, चाह मेरी तू खिवैया। तुम बिना जग में उलझ कर, दुख बहुत मिलती न छैंया।

62

बीत गये दिन तुम ना आये, अँखियाँ हरपल नीर बहाये। काली रैना मुझे डरावे, आन मिलो अब कुछ ना भाये। तेरी यादें लागे प्यारी, सुना बांसुरी मैं थक हारी। तेरी धाुन सुनने को ि्रती, लाल हुई आंखे कजरारी।

किसे कहूँ दिल मेरा डरता, नयना मेरे रिमझिम बरसें। कब से बैठा प्रभु जलूँ इसी में, कुछ भी मुझको नहीं सुहावे। विरह बढ़े प्रभु जलूँ इसी में, कुछ भी मुझको नहीं सुहावे। अँखियाँ तरस रही मिलने को, तन अँसुवन से सदा नहावे।

*हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, क्यों भूला निर्मोही हमको? बाट निहारूँ रस्ता देखूँ, कृपा मिले कब तेरी हमको। हरि हरि गाये सांसों की धाुन, मुझमें प्रभु जी ना कोई गुन। द्वार तुम्हारे आन पड़ा हूँ, हरि संभालो विनय यही सुन।*63

हरि बिना ना चैन आये, पल में खुशियाँ ि्र मातम। जप हरि को मिटते दुख हैं, जिन्दगी का जान आलम। जप कमल दिल का खिलेगा, नयन में जब हरि बसेगा। कौन अपना है पराया, छोड़ दिल हरि में लगेगा।

इन्तजा किसकी यहाँ है, मिट रही सारी कहानी। प्यार मन हरि से बढ़ा ले, तू बहा ले नयन पानी। ढल रही है शाम देखो, जाने न कब हो सबेरा। डूब जा हरि प्रेम में मन, दुख मिटे जिसने पुकारा।

नाच ले उसके इशारे, जानो उसकी ही झिलमिल। बन लहर बह ले जलधा में, हरी समर्पित हो पागल। वह हँसाता वह रूलाता, खेल कितने ही खिलाता। प्राण उसको खोजते है, उस बिना ना चैन आता।

64

पार लगा दो मेरी नौका, खड़ा हूँ मैं तेरे द्वार पर। दुख भंजक तुम सुख के दाता,नीर बह रहे मेरे झरझर। अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, जानो सबकी अन्तर्यामी। सूखा कण्ठ पिला दे पानी, मैं सेवक तुम मेरे स्वामी।

जग में भटका तुझे न पाया, जीवन अपना व्यर्थ बताया। सदा नचाती रही वासना, थक कर तुझ चरणों में आया। झोली खाली नीर बह रहे, मुझे न तू ठुकराना माली। ऊल तुम्हारी बगिया के हम, ना जाती नयनों की लाली।

*चाह प्यार की जीवन तरसा, देखूँ मेघ करें कब वर्षा। कृपा तुम्हारी का भूखा मैं, नयन नीर करते है वर्षा। बल दो होवे पूरी पूजा, तुम सा और नहीं है दूजा। नमन करो स्वीकार हमारा, करूँ नीर से तेरी पूजा।*65

ओम को जपते रहो मन, चैन दिल को आयेगा। आँखे आँसू से भीगी, कमल ऱि खिल जायेगा। सोंचता जग की रहेगा, चैन ऱि ना आयेगा। बीत जायेगा समय यह, ऱि बहुत पछतायेगा।

वह नियन्ता सृष्टि का है, चलते उसके इशारे। कौन तू बाधाक बने जो, समर्पित हो कह हारे। पालो कितनी ही आशा, ना दिल को चैन आता। टूटते जब दिल यहाँ पर, नयनों से नीर बहता।

समझा ले मन ओम जपो, दुख नहीं तू पायेगा। ना रहेगी चुभन बाकी, सब तरु वह छायेगा। ओम जप मन ओम जप मन, जिन्दगी का है यह धान। आदि वह ही अन्त वह ही, सोंचे क्या बह लहर बन।

66

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, मन की आँखों को तुम खोलो। क्षण भंगुर सुख मिटते सारे, हरि शाश्वत मन हरि में जी लो। जीवन है यह ढलती छाया, खेल खिलावे हरि की माया। जग में भटके चैन न आवे, मिले शरण हरि मिलती छाया।

याद करो हरि नयन बहेगे, कहाँ ठिकाना वह समझेगे। गिरते आँसू ऊल खिलावे, तेरी बगिया में महकेंगे। तन भी यह मिटता जाता है, जोड़ रहा किससे नाता है। क्षुद्र वासना में ना उलझे, प्रीति बढ़ा हरि घर जाना है।

सभी मिट रही यहाँ कहानी, इन नयनों से बहता पानी। जिसने हरि से प्रेम बढ़ाया, सच में होते वह ही ज्ञानी। हरि बिन हाय सताये रैना, जपो हरि मन मान ले कहना। दुनिया रंग बदलती हरपल, क्या शिकवा मन हरि में बहना।हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, इससे बढ़ा नहीं कोई धान। ताप मिटेंगे इस जीवन के, जाये हवा ले छिपा हरि धान। जीवन है अनबूझ पहेली, गये हार सब अंखियाँ रो ली। जगत भूल हरि धयान लगा ले, उसी धयान में मिटती होली।

67

हरि तुम मुझसे रूठो नाहीं, तुम बिन नयना नीर बहाई। याद तुहारी छिपे कहाँ हो, सुन लो मेरे कृष्ण कन्हाई। दर दर भटका चैन न पाया, मुझे नचावे तेरी माया। अवगुण मेरे क्षमा करो तुम, कृपा करो मैं द्वारे आया।

अंखियां बाट निहारें हरपल, नयना मेरे बरसे रिमझिम। सकल सृष्टि का तू है मालिक, कर पूजा स्वीकार मिटे गम। चल चल हारा तुझे न पाया, समझ सका ना मैं क्यों आया। क्यों जीवन यह सांसे लेता,मेरी रोती तुम बिन काया।

कुछ न सुहावे जग में भटकूँ, प्रीति लिये मै फ़िर भी अटकूँ। माया तेरी मुझे नचावे, कैसे मैं कर्मों को झटकूँ? हरि हरि गाऊँ नीर बहाऊँ, दिल यह किसको हाय दिखाऊँ? अन्तर्यामी घट घट वासी, चाह नयन में तुझे वसाऊँ।

जीवन तेरा तू मालिक है, मनुआ मेरा क्यों गाफ़िल है? पार लगा दो मेरी नैया, डूबी जाती तू खेवट है। प्रीति बढ़े हरि कुछ ना भाये, नयना झर झर नीर बहाये। मिट जाऊँ तेरी यादों में, विरह न कम हो तुझे बुलाये।

68

बिन तुम्हारे सांवरे, अब रहा जाये ना। करो प्यारी बातें अब, सांझ फ़िर जाये ना। सांस की है तू सरगम, दिलों का है चैना। मन न माने तुम बिन ना, खिलता यह फ़ूल ना।तू ही मेरा उजाला, बहारें है आती। तेरे बिना रैना यह, मुझको हैं डराती। आ जा सुना दे बन्शी, कब से सांस अटकी। नचाया मुझको तूने, जग में हाय भटकी।

तड़ता हूँ कितना मैं, तेरे बिना छैला। बना तू क्यों निर्मोही, क्यों हुआ मन मैला? आशा संजो के हारी, तुझ पर नाथ बारी। खेल बाकी कुछ पल का, नयना नीर जारी।

69

हरि तेरे गुण गाये हरपल, इस जीवन का तू ही है धान। कृपा तुम्हारी जब मिल जाती, मुरझाया खिल जाता उपवन। इस जीवन की तू है आशा, जग में भटका मिली निराशा। दुनिया रंग बदलती पल पल, बना मदारी करे तमाशा।

डोर हाथ में लिये नचावे, सुख दुख के तू खेल खिलाये। व्याकुल प्राण न पावे चैना, दिल में जब तक ना बस जाये। आया क्या मैं लिये प्रयोजन, धूल चाटते बीता जीवन। जग में भटका खोई मंजिल, नयना नीर बहाते निशदिन।

खेल खिलावे तेरी माया, तुझे पुकारें मिलती छाया। आनी जानी इस दुनिया में, मिटते ताप शरण जो आया। चुभन मिटे सब आंखे खोलो, हरि बोलो मन, हरि बोलो मन। हरि गंगा में बहो लहर बन, मिटे यहाँ फ़िर सारी उलझन।

70

हरि हरि जपते रहें सदा हम, जब तक तन में प्राण लिये हैं। शुभ भावों का सर्जन करना, झोली ले यह मांग रहे है। जाल विछाये होनी बैठी, समझ सकूँ ना दिल घबराये। अन्धाकार में रस्ता खोजूँ, बिना कृपा यह ना मिल पाये।इस होनी का जाल अनोखा, पता नहीं कब क्या हो जाये। अन्धाकार में दीप जलाकर, तू भटके को पथ दर्शाये। सारा है ब्रह्माण्ड नाचता, तेरे एक इशारे पर प्रभु। अपनी पीड़ा किसे दिखायें, तुम बिन लगता जियरा ना प्रभु।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, इस हिसाब को तू ही जाने। द्वार पड़े हम तो प्रभु तेरे, शुभ पथ दिखा न कुछ हम जाने। तेरे ही गुणगान करें हम, नहीं रूठ जाना बालक हम। नयनो से बहता पानी है, बढ़ता जाये प्यार मिटे गम।

71

कब मिलोगे जानते ना, खाक दर दर छानते हैं। झलक मिल जाये तुम्हारी, नयन मेरे तड़ते हैं। छोड़कर जब से गया तू, दर दर जहाँ में भटकते। कर जतन हारे सफ़र में, कैसे मिलो ना जानते।

डगमगा रही है नौका, कृपा तेरी चाहते हैं। पार करो मेरे खेवट, आस ले हम जी रहे है। दिल नहीं लगता हमारा, किस तरह दिल को लगाये। प्राण तुमको ही पुकारे, देखते कब सजन आये।

तुम बिना सूना जहाँ हैं, नयन से जाती न लाली। फूल तेरे बाग के हम, देखो अब आ जा माली। प्राण का प्यारा तुही है, जिन्दगी का तू सहारा। द्वार पर तेरे खड़े हम, फेर न मुँह मैं तो हारा।

72

सफर हो जावे सुहाना, संग में यदि राम होवें। बिना उसके डगर दूभर, न मंजिले आसान होवें। राम जपता जा सफर कर, दुख के बादल दूर हो। राम की लीला यहाँ पर, मन तू नहीं हैरान हो। नाचो कठपुतली बनकर, जानो ना तेरा यह घर। डोर उसके हाथ में ही, जान ले फिर क्या है फिकिर। नाम उसका याद कर जब, नीर यह अँखियाँ बहाये। खिल जाये मन की बगिया, बरसे सावन कंठ गाये।

मेरे सर्जक सुखदाता, भाग्य के मेरे विधाता। नयन रो रो कर बुलाते, सभी कुछ तुम पिता माता। राम तेरे द्वार पर ही, कर रहा कब से प्रतीक्षा। जाम को पीता रहूँगा, झोली खाली मिले भिक्षा।

73

दर्द ले कर फिर रहे हम, मिट ना पाता मेरा गम। क्यों छिपा ना जानते हम, मेरा सर्जक तू हमदम। नयन से प्रभु नीर गिरते, पथ ना जाने पर चलते। थाम हमको ईश लेना, ढले संधया विनय करते।

तुम जगत के हो रचैया, कठपुतली हम तुम्हारी। आँख तुमको खोजती है, नाच कर हे नाथ हारी। प्रभु पुकारे भूल अब ना, देखो नयनों का पानी। मिट रही मेरी कहानी, दर्शन तू दे दे दानी।

खूब भटकाया मुझे है, खूब तूने है रूलाया। पीड़ का सागर ऊनता, पर मिलती तुझ से छाया। तेरी हरि हम शरण में, नाथ तुम अपना बना लो। द्वार पर बैठे तुम्हारे, अब अंधोरे को हटा लो।

74

हरि संभाल लो मेरी नैया, पार नहीं होती यह नदिया। बहते आंसू तुझे पुकारे, देर करो ना अब ओ छलिया। मोहन मेरे छिपे कहाँ हो, दर्द यहाँ पीड़ा कितनी है। तुम बिन जीवन भी क्या जीना, रूठ गया मेरा साया है।

हरि हरि जपूँ तुझे ही खोजूँ, चैन न आवे हरपल रोऊँ। जियरा मेरा जले विरह में, चाह भस्म इसमे हो जाऊँ। पास नहीं कुछ भेट करूँ क्या, झुका शीश चरणों में आ जा। तुम सा नहीं और कोई भी, नयन नीर से करते पूजा। पंथ निहार थकी यह अँखियाँ, आ जाओ अब मेरे रसिया। तुम बिन सूना सब लागे है, नीर बहावें रोवें अँखियाँ। बालक जान क्षमा कर देना, मैं भटक रहा हूँ अज्ञानी। इस जीवन के तुम ही स्वामी, लाज राखना औघढ़ दानी।

75

छिप गये हो तुम कहाँ पर, बीतते दिन जा रहे हैं। जिय नहीं लगता हमारा, तुम बिना हम क्यों रहे है। मेरा सहारा तुही है, तुम बिना थक कर मैं हारा। कैसे हम समझाये दिल, भटकूँ दर दर मैं मारा।

मुझसे निंदिया भी रूठी, याद ले जिय को जलाती। न बनो निर्मोही इतने, शाम ढलती रात आती। ज्ञान का दीपक जला दो, फैला तम इसको भगा दो। तुम दयालू जानते सब, दो सहारा प्यार को दो।

नयना बस जाओ मेरे, बन्द पलकें कर न खोलूँ। बहुत भटका इस जगत में, क्या रखा जिससे तोलूँ। प्रभु नमन करते तुझे हैं, चल गिरें तुम थाम लेना। अबल हम विनती यही है, सुन लो मेरी बहे नयना।

76

सुपना सा सब बीता जाता, फ़िर भी मन जग में भरमाता। कहाँ गये जिनके संग खेले, आशायें ले हरपल रोता। हरि को मन में बसा बाबरे, संग न कोई देखे सुपने। प्यार बसा ले इन नयनो में, नहीं पराया सब ही अपने।

किससे पागल करे शिकायत, दो दिन खेल हरी घर जाना। कठपुतली बन नाच उसी की, मैं को छोड़ नहीं है बसना। हरि में धयान लगा ले पगले, नहीं सतावें जग के सुपने। नाचेगा नयनों में हरि ही, देखेगा फ़िर सब ही अपने।

*धूप छांव का खेल समझ मन, हरि जप हरि जप और नहीं कुछ। नीर बहें तेरे नयनों से, अर्पण कर हरि को वह सब कुछ। बहता जा मन सुरति लगाले, हरि की लीला हरि ही जाने। जग की पीड़ा नहीं सतावे, जाम उसी का पी दीवाने।*77

नयन बहते देख लो तुम, सिर झुकाये हम खड़े हैं। कृपा अपनी राखना प्रभु, अज्ञान में भटकते है। ज्ञान का दीपक जला दो, पायें हम तेरे पथ को। सृष्टि के मालिक तुम्ही हो, भूलना ना नाथ हमको।

मैं बना जग का तमाशा, बनी कितनी गिरी आशा। खो गये तुम किस जगह पर, घेरती मुझको निराशा। खिलता मुरझाया उपवन, प्यार तेरा मिले भगवन। नीर बहता है नयन से, तुम सुना दो वंशी की धुन।

सुनो विनती नाथ मेरी, मैं रंगू तेरे रंग में। जगत के भूलू सभी गम, तुम बसो मेरे नयन में। जिन्दगी की राह दुस्तर, प्रभु प्यार की है चाहना। हरि शरण तेरी पड़े है, लाज मेरी राखना।

78

जहाँ में किसको पुकारें, तेरे बिन न हो सबेरा। गिरें आंसू थके चलकर, ना हुआ दीदार तेरा। दास तेरे शरण में लो, डर रहा मेरा जिया है। ढूंढता अनजान गलियां, तू कहाँ पर छिप गया है।

कृपा की है भूख हमको, याद तुमको कर रहे है। तू सर्जक तू ही पालक, सृष्टि का तू ही तू मही है। नयनों में आओ मेरे, स्वप्न से न जाओ मेरे। स्वप्न सी सारी कहानी, स्वप्न में भी तुझे टेरे।

नाम ले जपते रहेंगे, बीत जायेंगे यह दिन। दिल कभी यह पिघल जाये, इंतजा आयेगा दिन। नमन को स्वीकार कर लो, प्रभु देखते हम राह को। याद में जो नीर बहते, वह खोजते तुझ चरण को। 79

हरि सागर हरि हरि मन जप ले, लहर बना सागर में बह ले। जीवन उसका उसको दे दे, नाचे सागर खूब समझ ले। आना जाना मर्जी उसकी, कौन यहाँ तू चलती उसकी। लहर समझ ले बह सागर में, जाने मर्जी सब है उसकी।

हरि जप हरि जप हरि सागर है, खेला सारा सागर का है। लहर उठी खोवेगी इसमें, जान यहाँ ना कुछ तेरा है। प्रीति बढ़ेगी सागर संग जब, तू ना, जानेगी सागर है। शोक यहाँ किसका करना तब, जनम मरण सब ही सागर है।

धयान लगा अन्तस में पागल, जान सकेगा तू है सागर। जन्म मरण से मुक्ति मिलेगी, नहीं यहाँ तू सब है सागर। लहर बना जप हरि सागर को, सुगम करे जो तेरे पथ को। जन्म लिया खोवेगा इसमें, लहर यहाँ ना, समझ झूठ को।

80

प्यार तुझी से हरि हम करते, इन नयनों से आंसू झरते। अगम अगोचर पार न तेरा, राह तुम्हारी हम तो तकते। सारा यह ब्रह्माण्ड नाचता, हर जीवन का तू ही सहारा। तुझे भूल कर ही दुख पावें, बल दो प्रीति बढ़े मैं हारा।

अनजाना पथ टेढ़ी गलियाँ, तुझे पुकारूँ पड़ता पैया। सर्जक मेरे इस जीवन के, सुन लो मेरी रोती अँखियाँ। धयान बढ़े हरि हरपल तेरा, मिट जाये तम होय सबेरा। अनहद बाजे तेरा हरपल, मगन होऊँ मिटे सब ़ेरा।

*बन कर लहर बहूँ सागर में, याद रहे तू सदा साथ में। आँसू भी बन जाते प्यारे, याद तुम्हारी हो यदि दिल मे। हरि हरि जपें हरी गुन गायें, इस जीवन को सुुल बनाये। प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, कृपा करो हम ना भरमाये।*81

जीवन दाता जीवन तेरा, कुछ भी यहाँ नहीं है मेरा। ़िर भी भ्रमित हुआ मैं डोलूँ, कृपा हो तब मिटे अन्धोरा। हरि हरि जपें ़ार कट जाये, इन नयनों में तुही समाये। छूटे जग की सारी चिन्ता, हरि ही नैया पार लगाये।

तुझे पुकारे रो रोकर हम, कहाँ छिप गये बन्शीधार तुम। तेरी बन्शी को सुनने को, अँखियां बरसे मेरी रिमझिम। हरि हरि गायें तुझे बुलाये, विरह निरन्तर बढ़ता जाये। जल बिन मछली ज्यूं मर जाये, मरूँ विरह में पर न भुलाये।

अन्तर्यामी घट घट वासी, काली रातों में भी साथी। तुझे भूल कर हम दुख पावे, निर्मल बुि) करो मन हाथी। नयनों से दो मोती गिरते, तुझें ढूंढते हरि यह ़िरते। करूणासागर करो कृपा अब, दीनों के दुख तुम ही हरते।

82

हरि ओम कभी तू आयेगा, नैया को पार लगायेगा। गिरें नीर ़ूल खिलायेगा, जीवन में सुगन्धा लुटायेगा। तू ही तू प्रभु मैं नाही, स्वर प्राणों में यह जगायेगा। जीव तड़ा बहुत है भटका, शान्ति का पाठ सुनायेगा।

जग में दुख का दरिया बहता, समझे नहीं तुझे तो रोता। मन हो मगन लगन लगे तो, सागर में लहरों सा बहता। हरि ओम जपो हरि ओम जपो, यहाँ नहीं है कुछ भी रहता। द्वन्द मिटें सारे जगत के, मन को छोड़ यहाँ जो बहता।

बन्शी बाजे नाचे तन यह, जाये भूल जगत के गम को। तम भागे तेरा हो आना, तू संभाले ़िर इस तन को। हरि ओम जपें धाुन यही उठे, हरि ओम कृपा यही करना। इन प्राणों की प्यास तुम्ही हो, देखो बहते मेरे नयना। 83

ले चल मुझे वहाँ तू, तेरा जहाँ भजन है। जीवन प्रभु तुम्हारा, मेरा तुझे नमन है। हरि पार करो नैया, मेरा तुही खिवैया। अबल नाथ मैं बालक, नीर बहावें अँखियाँ।

पड़ा वासना में मैं, गया भूल कन्हैया। स्वीकार मुझे कर लो, पड़ता तेरे पैंया। हरि हरि तुझे पुकारूँ, जीवन में तू आये। ़िर रहा भटकता मैं, चाह प्यार को पाये।

थाली में पुष्प नहीं, ़िरता झोली खाली। देखे न नीर कोई, सुन तुझे कहूँ माली। कैसे रिझाऊँ तुझे, ना जान सका हारा। नयनों में बस जाओ, सुन लो विनय हमारा।

84

लहर उठी सुपनों को लेती, इनको ले कर वह है जीती। सागर उसे चलावे सच यह, समझे ना सुपनों में बहती। हरि का रूप सागर को भूली, चंचल मन को समझे नहीं दौड़ी। पागल बन कर भटके सोंचे, कैसे पाऊँगी हरि सीड़ी।

निज अन्तस को वह न देखे, जिसमें सागर छिपा हुआ है। वही नाचता कौन यहाँ तू, शोर उसी का मचा हुआ है। हरि जप हरि जप देख स्वयं को, सारे ही भय मिट जायेंगे। जन्म मरण का बन्धान टूटे, सुख के बादल ़िर छायेंगे।

*कुछ भी बस में नहीं लहर के, उठी यहाँ खोवेगी इसमें। खुद को कर्ता मान तड़ती, कर्ता छोड़े रहे न गम में। हरि सागर हरि सर्जक तेरा, जप इसको मिट जावे ेरा। तुझे नचावे सत्य जान ले, नाच जान पर कुछ ना मेरा।*85

नाथ खड़ा हूँ मन्दिर तेरे, प्यार मिले खिल जाये जीवन। नयना बरसे मेरे रिमझिम, तुम बिन मेरा नहीं प्रयोजन। मन बैचेन तुझे यह ढूढ़े, तेरा पता कहाँ से बूझे? देखें राह थकी यह अँखियाँ, कर प्रकाश जो रस्ता सूझे।

जियरा आवे मेरा भर भर, तुझे पुकारूँ मैं रो रोकर। विरह तुम्हारा प्यारा लागे, मिट जाऊँ मैं तुझे याद कर। नहीं ेर तू नयना मुझसे, तन मेरा बिरहा से झुलसे। जग की प्रीति लुभा न पाई, याद तुझे कर नयना बरसे।

हरि हरि जपूँ कटे यह जीवन, इस जीवन का तू ही है धान। तुमको भूला मैं दुख पाया, कृपा करो महके यह उपवन। अन्तर्यामी कहूँ तुझे क्या, घट घट की तुम सबकी जानो। शीश झुकाये राह निहारे, गये हार हम अब तो मानो।

86

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक है हम अज्ञानी हैं। दीनबन्धाु तू सुख का दाता, धयान लगाते सब ;षि मुनि है। पाप मिटे सब भजे तुझे जो, अज्ञान मिटे जिय हर्षाये। पग पग जो लगें दंश है, उनसे भी ना घबराये।

प्यार सदा तुम अपना देना, मैं मन्दबुf) तुम ज्ञानवान। नजर चुरा ना तेरे बालक, सूना तुम बिन सारा जहान। चल चल कर जब गिरें यहाँ पर, नाथ थाम तुम हमको लेना। शुभ पथ आलोकित प्रभु करना, मेरी मन्जिल तुम ना खोना।

*खेल वासना का क्षण भंगुर, नाच नचाती जो हरपल है। जिसके दिल में तू बस जाये, पार बसाती ना उस पर है। तुमको सुमरे विनय यही हरि, सोना जगना सब तुझमें हो। जीवन नदिया बहती जाये, कभी नहीं तुमसे विछुड़न हो।*87

बनी यहाँ जैसी भी किस्मत, सन्तोष हमें करना होगा। विधिा के यहाँ खिलौने हम है, स्वीकार हमें करना होगा। पथ खोजें अनजानी गलियां, चलते पर ना दीखे सैंया। याद उसे कर मन चलता जा, थामे वह ही तेरी वैंया।

कितनी जग में योनी घूमें, भाग्य निराला सबका ही है। अलग नहीं तू भी उनमें से, बहता जा हरि रखबाला है। हरि जप ले मन ताप मिटेंगे, कुछ पल बाकी सांझ ढले है। जानी किसने हरि की माया, झुक जा इसमें राम मिलें है।

क्या घमण्ड करता जीवन में, सबका ही तो वह मालिक है। शीश झुका मन कर ले पूजा, कठपुतली बन कर नाचें है। हरि हरि जप ले दूर भगे दुख, वह ही तो तेरा सर्जक है। अपना क्या तेरा है इसमें, जानों सब उसकी मर्जी है।

88

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव तू ही, मेरी अँखियाँ िर क्यों रोई? तेरे बालक अज्ञानी हम, जियरा मेरा लगता नाईं। चल चल गिरे नहीं पथ सूझे, इस जीवन को स्ल बना दो। कृपा बिना ना कोई बूझे, दास तुम्हारे ज्ञान हमें दो।

जग में भटका ना सुख पाया, यहाँ वासना की है दलदल। नयन बसो तुम मेरे मोहन, तेरा नाम जपें हम हरपल। अबल नाथ हम संभल न पाये, नाथ थाम लो बहियां मेरी। अँखियाँ नीर गिराये झर झर, विनय करूँ अब सुन ले मेरी।

*द्वार पड़ा मैं नाथ तुम्हारे, हरि हरि जपूँ हरी गुन गाऊँ। क्षण भंगुर दुख सुख यह सारे, चाह तुझी से प्रीति बढ़ाऊँ। बहते नयना तुझे पुकारें, डूबे किस्ती पार लगा दे। किससे कहूँ न कोई बूझे, मेरे मनको तू समझा दे।*89

बन मिटने का खेल चल रहा, पागल मनुआ सोंच क्या रहा? आनी जानी इस दुनिया में, पकड़ करे क्या कुछ नहीं रहा। किसे सुनावे अपनी गाथा, सुपना सा सब बीता जाता। हरि भज हरि भज स्र कटेगा, दुख से रहे न कोई नाता।

हरि बस जाये जब नयनों में, जग की चिन्ता नहीं सताये। सबका रखवाला वह ही है, धान्य नीर जो उसे चढ़ाये। हरि में धयान रहे जब हरपल, मिट जाती सब जग की हलचल। सबका दाता पालक वह है, जान यहाँ सब हरि की हलचल।

मर्जी उसकी आना जाना, बहता जा तू यहाँ लहर बन। हरि को जप ले दन्श मिटेंगे, सुरति लगे खिल जाता है मन। प्यास यही इन प्राणों की है, वरना नहीं मिटे दिल के गम। खोज रही आंखे रोयेगी, जब तक नहीं मिलेगा प्रियतम।

90

किसके पीछे भाग रहे हम, कोई हाथ यहाँ ना आये। अपने अपने सुपने ले कर, इस सागर में बहते जाये। मन प्रीति लगा हरि से पगले, अन्तस में तेरे वही छिपा। झांके सागर में स्वयं लहर, देखे तो उसमें वही छिपा।

हरि जप ले और नहीं है कुछ, सागर ही नाचे सभी जगह। मैं को तज बह ले इसके संग, ले जायेगा वह सभी जगह। हरि बिन सूना सूना लागे, अन्तस में झांक भरम भागे। चलती मर्जी उसकी है, मन करो समर्पण हरि आगे।

*पीड़ा सारी मिट जायेगी, मृगतृष्णा नहीं सतायेगी। कहना सुनना फिर किससे क्या, छवि नयनों में लहरायेगी। करूणा सागर वह दुखहर्ता, तुम नयन उठा देखो भर्ता। सबका ही तो वह पालक है, क्यों बना हुआ है तू कर्ता।*91

नारायण भज नारायण भज, कर ले मन उसका नित सुमरण। करूणा का सागर है वह मन, भज ले सब मिट जाते क्रन्दन। निर्बल का वह ही है बल मन, सब ताप हरे भज ले तू मन। बनते आंसू भी फूल यहाँ, खिल जाता मुरझाया उपवन।

सबका दाता पालक है वह, तू चिन्तित मन क्यों होता है। जब चोंच दई चुग्गा देगा, सर्जक को भूला रोता है। बिन याद करे ना ताप मिटे, पीड़ा का दरिया चैन कहाँ? अनहद की मनुआ सुनले धुन, क्षण भंगुर ना विश्राम यहाँ?

बैचेन न हो वह संग तेरे, मत भूल उसे रट ले हरपल। तू भूल उसे दुख पाता है, पी ले अमृत वह गंगा जल। मन हरपल उसको याद करो, तेरा होगा सुन्दर जीवन। जग के वह ताप मिटायेगा, नैया खेवेगा खेवट बन।

92

ले चल मुझे भुलावा देकर, अँखियाँ मेरी आवे भर भर। निशदिन तेरी करूँ प्रतीक्षा, जियरा लागे ना भग दूभर। सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, जियरा मेरा करता धाक धाक। अँधियारे में दीखे ना कुछ, दीप जला दो पहुँचूँ तुम तक।

याद तुझे कर रोये अँखियाँ, चैन पड़े ना दे दे छैयां। करूणा के सागर कहलाते, शीश झुकाऊँ पड़ता पैयां। सूना सूना सब जग लागे, तेरे बिन हम हुए अभागे। मेरे अन्तस में बस जाओ, सुरति रहे सोये या जागे।

दास तुम्हारा अन्तर्यामी, खड़ा द्वार पर तेरे दानी। अँखियाँ रोती मुझे देख लो, कहाँ छिप गये बहता पानी। क्षण भंगुर बस तेरी माया, पाप पुण्य का खेल रचाया। सुख दुख के डोले में चढ़कर, नाच रही यह मेरी काया।

फूल तुम्हारी बगिया के हम, जाती नहीं नयन की लाली। प्यार हमें तुम अपना दे दो, डरा रही रैना यह काली। कैसे दिल समझाऊँ अपना, क्यों तड़ू जब सब है सुपना। विनय बसो मेरे नयन में, चाह यही अब तुझ में बहना।

93

हरि खोजती अँखियाँ फिरें, आओ पड़ता मैं पैंया। मन नहीं लगता हमारा, चाहें तेरी ही छैयां। पंख होते दूर उड़ता, तुम बिना हरि नीर झरता। न बनो निर्मोही इतने, मेरे सर्जक तुम कर्ता।

जिन्दगी यह भागती है, जायेंगे कहाँ ना पता। प्राण यह तुमको पुकारे, प्रभु माफ़ कर मेरी खता। तड़ते हम सब जगह तू, खेल यह कैसा रचाया। नमन ले लो प्रभु हमारा, जानते न तेरी माया।

बह सकें हम लहर बन कर, बोधा तू इतना जगा दे। अज्ञान में हम भटकते हैं, वासना सारी मिटा दे। वन्दगी करूँ तुम्हारी, लाज रखना ईश मेरी। चाहते तेरी दया हैं, देख लो तुम नीर जारी।

94

हरि बिन सब कुछ लागे खारा, मन ले चल जहाँ हरि हमारा। प्यास उसी की बढ़ती जाये, रूके नहीं नयनों की धारा। कण कण में तू छिपा हुआ है, फिर भी रोती मेरी काया। सुरति न विसरे कभी तुम्हारी, नहीं जानता तेरी माया।

बहता जाऊँ लहर बना मैं, निशा रहे ना मैं का बाकी। मृगमरीचिका नहीं लुभावे, देखूँ हरपल तेरी झांकी। मेरे सर्जक तुम पालक हो, चाह यही तुमसे है कहना। बस जाओ मेरे नयनों में, मेरे दिल में तुम हरि रहना।

*तुम बिन सूना सब लागे है, नीर बह रहे मेरे झर झर। अपनी कृपा बनाये रखना, अज्ञानी मैं रस्ता दूभर। शरण तुम्हारी नाथ पड़े हैं, मेरे सर्जक ज्ञान हमें दो। डगमग करती इस नौका को, विनती करता पार लगा दो।*95

चाँद तारों के पार चल, बसते जहाँ हरि वहीं चल। उस बिना लागे नहीं मन, बरसे नयनों से है जल। प्राण बिन उसके तड़ते, हरि मिलन की राह तकते। जी रहा किस आस को ले, नयन मेरे हैं बरसते।

लिख चुके लिख के हारे, तड़े हरि बिन तुम्हारे। तुम दया का हाथ रखना, गिर रहे यह नीर मेरे। तुम्हारी दुनिया अनोखी, द्वार तेरे सभी आते। नाचें कठपुतली तेरी, मैं नहीं क्यों छोड़ पाते।

वासना के पंक में गिर, हाय यह जिवड़ा तड़ता। भूलकर तुमको मुरारी, जीव सुपनों में विचरता। साथ हो फिर भी तरसते, खेल यह कैसा रचाया। बह सके हम लहर बन कर, बोधा दो सब ओर छाया।

96

नैया को पार लगावेगा, हरि ओम कहो हरि ओम कहो। मन के सब भरम मिटावेगा, मिट जायेंगे दुख ओम कहो। उसकी मर्जी से आना है, जायेंगे कोई न पूछेगा। सब चले इशारे उसके हैं, मैं छोड़ नहीं तो भटकेगा।

जप ले उसको अमृत है वह, पी ले उसको गंगा जल वह। जप उसको आये चैन तभी, कठपुतली हम मालिक है वह। जाता जीवन मन नहीं उलझ, हरि रस को जिसने चाख लिया। क्षण भंगुर सारे खेल यहाँ, फिर प्राण पुकारें मिलो पिया।

*मैं तुझे पुकारूँ हरि हरपल, नयनों से गिरता मेरे जल। बिन कृपा यहाँ बह जायेंगे, भक्ति वर दो हम नाथ अबल। तुम ही सर्जक तुम ही पालक, बुद्धि के भी तुम मालिक हो। प्रभु ज्ञान हमें हरपल देना, शुभ कर्म सदा ही हमसे हो।*97

राम की लीला राम जाने, सोच रहा क्या तू दीवाने। सुख दुख का वह खेल खिलाये, सारे रस्ते है अनजाने। गीत उसी के मन गाता चल, मिट जायेंगे सारे क्रन्दन। धयान उसी का कर ले पगले, दन्श मिटें फिर बहे लहर बन।

अपना क्या यह तन भी जाता, जोड़ रहा है किससे नाता। दिल में जिसके हरी समाये, मिट जाता तब भय से नाता। अज्ञानी मन चाह यही रख, प्रेम डोर से हमको खींचे। करो समर्पण मन हरि आगे, सब ही उसके आगे नाचे।

राम राम जप यहाँ नहीं कुछ, मर्जी जहाँ वहीं ले जाये। कौन पूछता तुझसे पागल, जनम मरण का खेल खिलाये। राम जपेगा, चैन मिलेगा, ढलता दिन है डर न लगेगा। जिसके यहाँ इशारे चलते, पागल मन तू कब समझेगा।

98

चल रहे मंजिल न कोई, रैन काली आँख रोई। सृष्टि पालक जीव स्वामी, मिलती कृपा चैन होई। एक तेरा ही सहारा, नमन ले लो, प्रभु हमारा। जानते हम कुछ नहीं हैं, इंतजा कर मैं हूँ हारा।

गिरे चल चल जगत में हैं, दन्श कितने ही सहे हैं। वासनाओं से दुखी हो, हरि शरण तेरी पड़े हैं। कृपा अपनी राखना हरि, लक्ष्य जीवन का तुम्ही हो। अनाथ बना हरि न घूँमू, यह न भूलूँ साथ तुम हो।

सब जगह है राज्य तेरा, जिय न जाने है अन्धोरा। कृपा तेरी जब बरसती, तभी हो जाता सबेरा। शीश को हरि हम झुकाये, द्वार पर तेरे खड़े है। प्राण यह तुमको पुकारे, नयन मेरे झर रहे है।99

हरि बिना तेरे नहीं कुछ, तड़ते ले कर यहाँ दुख। जाम तेरा जिसने पिया, फिर बरसता है यहाँ सुख। धूप छाँव खेल दुनिया, प्यार हमको सदा देना। प्रीति बढ़ती ही रहे हरि, तुम मेरे दिल में रहना।

घूमते अज्ञान में हम, दास तेरे जान लेना। ईश मांगे क्षमा तुमसे, बहते हैं मेरे नयना। अबल हम तुझ ओर देखें,लाज मेरी ईश रखना। जिन्दगी की डोर तू ही, भक्ति वर दे यही कहना।

सांझ ढलती जा रही है, रात आती जा रही है। मैं तुझे हे हरि पुकारूँ, सृष्टि का तू ही मही है। गीत गाता मैं रहूँ हरि, हर सांस में जपता रहूँ। दूर ना होना कभी भी, हरि याद में तेरी बहूँ।

100

हरि माफ़ हमें तुम कर देना, मैं कौन हूँ दिल न जाने है। बहते आंसू मेरे देखो, कठपुतली तेरी नाचें हैं। कभी जीता कभी हारा हूँ, हरि दिल में रहना सदा तुम्ही। मुझको न भुला देना मोहन, चरणों में पूँ संसार मही।

देना वर प्रीति बढ़े तुमसे, यह तो गिरता जाता है तन। गिर गिर उठे सम्भले हरपल, ना जाने कल क्या हो तू सुन। कुछ ना जानूँ मैं अबल नाथ, जो खेल खिलाये वह खेलूँ। मुझको हरि दोष नही देना, नयना चाहे तुमको पा लूँ।

ना छोड़ मुझे मेरे खेवट, जियरा मेरा करता धाक धाक। कैसे मैं पार करूँ नदिया, जीवनदाता सबका पालक। जाये ना दीपक मग में बुझ, गिर जाऊँ कहाँ ना जानूँ कुछ। शुभ कार्य सदा हों विनती यह, आँसू ही पास न मेरे कुछ।101

जप ले हरि को न यहाँ है कुछ, धोखा ही धोखा मन व्याकुल। जितनी राखेगा आस यहाँ, टूटें सुपने फिर जलता दिल। क्या कहें नहीं हम कह पाते, आंसू भी सूख यहाँ जाते। बिन हरि कृपा नहीं मिटते दुख, मन धान्य वही हरि गुण गाते।

नयनों से बहे जो गंगाजल, हरि चरण चढ़ा पावन हो मन। बस एक सहारा उसका है, जाता जीवन मन ले तू सुन। सर्जक वह नयना नहीं चुरा, हरि गुण गा उससे प्रीति बढ़ा। जग के जब दन्श लगें तुझको, तू देख पास में वही खड़ा।

उसके बिन पार न हो नौका, हरि भज हरि भज यह कटे फ़र। सागर यह खेल खिलाता है, न पता लहर बह जाये किधार। हरि भज मन होगा शान्त यहाँ, देखेगा सब कुछ वही यहाँ। अपना क्या सब कुछ वह ही है, मैं मिटा नाचता वही यहाँ।

102

कैसे भूला तेरी पूजा, नीर नयन से मेरे गिरता। कैसे पहुँचूँ तुझ चरणों तक, बल दो नाथ विनय यह करता। अनजानी गलियों में घूमूँ, पता कहाँ तेरा मैं पूछूँ? बना बाबरा घूम रहा मैं, बहते आँसू कैसे पोंछू?

लाज राखना बालक तेरा, सर्जक तू कुछ भी ना मेरा। फ़िर भी नीर गिरायें अंखियाँ, क्या कसूर बतला दो मेरा। हरि हरि कहते बीते जीवन, मेरे जीवन का तू धान। ढलती संधया भूल मुझे ना, बजा बांसुरी नाचे यह मन।

*अगम अगोचर पार न तेरा, कैसे पाऊँ जियरा डरता। सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, जिवड़ा क्यों बनता है कर्ता। लहर बनूँ मैं भूल सभी दुख, मर्जी तेरी जहाँ बहाये। सुरति न तुमसे पल भर टूटे, देखो नयना आंसू आये।*103

हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, नयना रोयें ढूंढूं तुमको। पता न तेरा हरि मैं जानूं, प्राण पुकारें भूल न हमको। सकल सृष्टि का तू है मालिक, तुमको भूला मैं क्यों ग़ाफ़िल। कृपा बनाये रखना अपनी, नयनों से बहता मेरे जल।

हरि हरि, हरि हरि, रोयें अंखियाँ, खेल खिलाता क्या मनवसिया। पूजा कैसे करूँ मैं पूरी, कहाँ छिपे पड़ता मैं पैंया। अबल नाथ हम बह जायेंगे, जो ना थामी मेरी बैया। दास बना लो मुझको अपना, कट जाये यह जीवन संधया।

इस जंगल में भटक रहा मैं, पाप पुण्य सब मुझे डरावे। पार करूँ कैसे मैं रेखा, इन नयनों में आंसू आवे। मेरे मौला मेरे सर्जक, हम सब तेरी ही सन्ताने। ज्ञानदीप को करो प्रज्वलित, हम सब प्रभु तुमको पहचाने।

104

हरि भज हरि भज हरि भज मन तू, वह छिपा हुआ मन जप ले तू। जग में भटका चैन मिला ना, मन बसा हरी इस दिल में तू। सारा जग पागल है धाोखा, हरि बिन पार न होवे नौका। बैचेन न हो जीवन थोड़ा, मान ले मन दे उसे मौका।

वह आदि अन्त सबका स्वामी, वह ही सब जग का है दानी। जाये कहाँ पागल तज उसे, हरि चरण चढ़ा नयना पानी। जीवन थोड़ा हरि संग गुजार, उसके ही संग बहती बहार। सिर द्वार उसी के रख दे तू, दे न दे मर्जी उसकी प्यार।

हरि भज ले शान्ति छिपी इसमें, जग के टूटे सारे सुपने। हारे को हरि का नाम यहाँ, बल कितना मन क्यों ना माने। बन दास हरी का कटे फ़र, बहता जा बन कर यहाँ लहर। कुछ हाथ नहीं सब कुछ उसका, फ़िर भी पागल बन करे फ़र।105

हरि भज मग में सहज बहेगा, क्षण भंगुर हैं सारे सुपने। निष्प्रयोजन खेल चल रहा, ढूंढ रहा पागल ना जाने। इस विराट लीला में देखों, कितने स्वर हरपल उठते है। नहीं जान पाया कोई भी, बैचेन हुए हम रोते है।

मन यहाँ लगाते घूम रहे, इच्छाओं को ले तरस रहे। पूरी ना होती रोते फ़िर, हरि हारे तुझे पुकार रहे। मन बना भिखारी ऐसा क्यों, देखे कर्मों का क्या लेखा। ना भूख मिटे तड़पे हरपल, ना आंख खोल जीवन देखा।

सब नश्वर है क्यों प्रीति करे, बहती नदिया क्यों लहर डरे। अस्तित्व लहर का नदिया संग, झांके अन्तस फ़िर प्रेम करे। बन पागल दौड़ लगा कितनी, ना मिल पायेगा ऐसे सुख। न देख प्रयोजन धयान लगा, मिट जायेंगे फ़िर सारे दुख।

106

हरि संभालो दास तेरा, कंटकों ने मुझे घेरा। तुम बिना कुछ भी नहीं है, तम हरो कर दो सुबेरा। पार करो मेरी नैया, तुम्ही मेरे हो खिवैया। तुम कृपा से पार होवें, सुनो विनती जग रचैया।

पुकारे वैचेन मनुआ, बीतते पल जा रहे हैं। क्षणिक है सब वासनायें, नयन मेरे बह रहे हैं। सुरति तुझमें ही रहे हरि, बन लहर बहता रहूँ मैं। अजनबी दुनिया भटकता, शरण तेरी हरि गहूँ मैं।

*शान्ति के सागर तुम्ही हो, तुम बिना न चैन आये। प्राण यह तुमको पुकारे, पथ को देखे कब आये। करता आंसूँ से पूजा, ना जगत में मोल इनका। लाज मेरी राखना हरि, तुम बिना कोई न दूजा।*107

जीते कौन यहाँ पर हारे, तू जाने ना हरि ही जाने। टूट रही हैं सारी कड़ियाँ, तू माने चाहें ना माने। हरि भज मन को आये चैना, मनुआ जग में रस ना लेना। घूमें सब निज इच्छाओं में, हरि भज नहीं शिकायत करना।

आनी जानी इस दुनिया में, आंख खोल देखो यह मौका। कदम कदम पर मिलता धोखा, हरि भज पार करेगा नौका। गिर जा मन हरि के चरणों में, जीवन है यह एक पहेली। खेल उसी का तू क्या पगले, ;षि मुनि हारे अँखियाँ गीली।

हरि जप और नहीं है कुछ भी, सुपना सा जग मिटता सब ही। नीर बहाती रहती अँखियां, उस बिन शान्ति मिलेगी ना ही। झुक जाओ कट जाये रैना, किससे कहना हरि में बहना। नाच रहा यह सागर नाचे, लहर बना इसमें ही बहना।

108

हरि दास बना लो अपना तुम, हम हार चुके कुछ भी ना दम। दे दो विवेक रस्ता दूभर, किरपा तेरी चाहें हरदम। नाथ तुम्ही इस जीवन के धान, काली रैन न गुजरें यह पल। खोजूँ कहाँ न दीखो तुम तो, इन नयनों से गिरता है जल।

बहता जीवन झरते नयना, अर्न्तयामी तुम, क्या कहना? पार लगा दो मेरी नौका, पांव पडू मैं दिल में रहना। सृष्टि नियन्ता जग के पालक, जियरा मेरा करता धाक धाक। तुमको कैसे पाऊँ मोहन, तम हर लो मैं पहुँचू तुम तक।

*दिल में यह गम भूल गया क्यों, मेरे जीवन का तू ही धान। अश्रु चढ़ाऊँ मैं चरणो में, लाज राखना तुम खेवट बन। जीवन मेरा जले यह हरपल, बरसो अब तो कर दो शीतल। खड़े द्वार पर करें प्रतीक्षा, ना संधया यह जाये भी ढल।*109

हरि तुम्हारे गीत गाऊँ, चाहता तुमको रिझाऊँ। स्वर उठा न पाती वीणा, करो दया तुमको पाऊँ। अबल हम तुझ ओर देखें, कब कृपा होगी तेरी। थक गये चल चल यहाँ पर, सुन लो विनती मेरी।

क्रर यह अनजान रस्ते, ठोकर खाते है फ़िरते। करो प्रभु जी तुम उजाला, तम में जग के दंश डसते। प्यार तुमसे हरि करें हम, इन नयन से आंसू झरें। छिप गये खोजे कहाँ पर, कुछ तो कहो हम क्या करें।

देख लो यह नीर झरते, खोजते तुझे ही फ़िरते। न इन्हें पूछे जगत में, रूठे क्यों ना प्यार करते। जल रहा तेरे विरह में, प्यार पाने को तरसता। नमन को स्वीकार कर लो, यादें तेरी ले जीता।

110

हरि पुकारें तू न आये, क्या हमारी यह नियति है? नाथ हमको मफ़ करना, जानते ना क्या सही है। चाहते ले कर भटकते, दिलों के अरमान जलते। तुमको कैसे पायेंगे, नयन से आँसू निकलते।

HARI BOLO

ज्योति का प्यासा पतंगा, शमा पर वह घूम आवे। गोद में ले कर उसे वह, जिन्दगी का दुख मिटावे। हरि बढ़ा दे तू विरह को, याद में पल बीत जायें। सांस यह तुमको पुकारे, बस तुम्हारी गोद भाये।

हरि जपूँ छूटे न दिल से, नयन मैं तू ही समाये। पाप क्या है पुण्य क्या है, विनय तू सबसे बचाये। नीर को स्वीकार कर लो, नाथ तेरे दास हम है। चरण में तेरे पड़े प्रभु, बनो खेवट आस यह है।

BY CHANDRA PRABHAKAR